हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार 22 फरवरी 2026

11 सरपंच दौड़ में चैहड़ के सरपंच रहे अव्वल

12 रेलवे अंडरपास, समस्या बनी खास खेतों ...

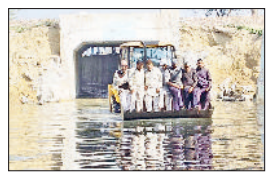

जनस्वास्थ्य विभाग शहर में अनेक जगहों पर गड्ढे खोदकर भूला संकेतक भी नहीं लगाए

हर गली व चौक-चौराहों के कॉर्नर पर मुहं बाए खुले पड़े मैनहोल और नाले

शहर के ये डेथ प्वाइंट्स बुझा सकते हैं किसी के घर का चिराग

राकेश भटठी ▶▶| भिवानी

- *शहर के चौक-चौराहों पर सीवरेज के मैनहोल की सफाई के लिए कभी पंपसेंट तो कभी मशीन लगाई जाती हैं और वो मशीने महीनों तक सड़क के बीच खड़ी रहती हैं, जो बड़े हादसे निमंत्रण देती रहती हैं।*

दुपहिया या फॉर व्हीलर या फिर पैदल चलते समय आप बिल्कुल सावधान होकर चले, क्योंकि हर गली व चौक-चौराहों पर मौत आपका इंतजार कर रही हैं। जी हां हम बात कर रहे हैं हर गली, चौक-चौराहों पर खुले पड़े सीवरेज के मैनहॉल, नाले व गड्ढों की, जो किसी भी समय बड़े हादसे का अंजाम दे सकते हैं और किसी के घर का चिराग बुझा सकते हैं।

जनस्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग द्वारा कभी पानी की लीकेज तो कभी सीवरेज लाइन ब्लॉकेज की समस्या को दुरूस्त करने के लिए शहर में आएदिन गड्ढे खोदे जाते हैं, लेकिन इन गड्ढों को विभाग बंद करना भूल जाता हैं, ऐसे में रात के समय ये कभी भी किसी की अकाल मौत का कारण बन सकते हैं। उल्लेखनीय हैं कि जनस्वास्थ्य विभाग द्वारा शहर के चौक-चौराहों पर सीवरेज के मैनहॉल की सफाई के लिए कभी पंपसेंट तो कभी मशीन लगाई जाती हैं और वो मशीने महीनों तक सड़क के बीच खड़ी रहती हैं, जो बड़े हादसे निमंत्रण देती रहती हैं। विभाग द्वारा सड़क व गलियों के कॉर्नर पर खोदे गए गड्ढे खतरा पैदा करते हैं और ये बड़े हादसे को अंजाम देकर किसी के घर का चिराग बुझा सकते हैं। जनस्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग द्वारा दूषित पेयजल लाइन को दुरुस्त करने के लिए शहर में अनेक जगहों पर गड्ढे खोद रखे हैं, जो हादसे का करण बन सकते हैं। शहर व बाहरी इलाकों में धुंध के कारण विभाग द्वारा बरती जा रही लापरवाही से बड़ा हादसा घटित होकर कई लोगों की जान तक जा सकती हैं। शहर में खोदे गए गड्ढों पर विभाग द्वारा संकेतक तक नहीं लगाए जाते और न ही विभाग ने ऐसे प्वाइंटों पर किसी कर्मचारी को तैनात किया हुआ हैं।

वहीं शहर में विभाग द्वारा बनाए गए बरसाती नाले भी काफी जगहों से क्षतिग्रस्त हैं और खुले पड़े हैं, जो राहगीर या वाहन चालक के लिए डेथ प्वाइंट्स साबित हो सकते हैं। जनस्वास्थ्य विभाग ने वैश्य मॉडल स्कूल के पास दिनोद गेट सरकुलर को काफी दिन से खोद रखा हैं, जिसकी वजह से आवागमन पूरी तरह से बाधित रहता हैं। वहीं रास्ता भी वन वे हैं। इसी तरह हनुमान गेट पर सड़क धंसने की समस्या बनी हुई हैं।

भिवानी। हनुमान गेट से बैंकुठ धाम मार्ग के कोने पर खुला पड़ा पानी का वॉल व नाला और दादरी गेट चौक से जैन चौक मार्ग के कोने पर खुला पड़ा नाला।

शहर में अनेक जगह पर खुले हैं पड़े नाले

भिवानी। दिनोद गेट वैश्य मॉडल स्कूल के पास खोदा गया सरकुलर रोड, जहां आवागमन बाधित रहता हैं। फोटो : हरिभूमि

शहर में अनेक चौराहों व गलियों के कॉर्नर पर बरसाती पानी खुले पड़े हैं, जो टर्न लेते ही दुर्घटना को अंजाम दे सकते हैं। बावड़ी गेट चौक से धानक शिव धर्मशाला की ओर मुड़ते ही दुकानों के आगे नाला खुला पड़ा हैं, जो काफी खतरनाक हैं। वहीं श्रीकृष्ण प्रणामी आश्रम के सामने से रामगंज मोहल्ला श्रीराम मंदिर वाले रोड के कॉर्नर पर भी नाला खुला पड़ा हैं, जो कभी भी किसी को आगोश में ले सकता हैं। दादरी गेट चौक से जैन चौक की तरफ एंट्री करते ही कोने पर नाले खुला पड़ा हैं, जिसपर सुरक्षा दृष्टि से जाली लगाई गई हैं, ताकि कोई दुर्घटना न घटे, लेकिन जाली टूट चुकी हैं।

सप्ताह में काम पूरा करवा दिया जाएगा: एक्सईएन

हनुमान गेट चौक पर चौगानन माता मंदिर के सामने घंसी लाइन पर काम चल रहा है, उसे सप्ताहभर में पूरा करवा दिया जाएगा। इसके साथ ही वैश्य मॉडल स्कूल के पास पैट्रोलपंप के सामने भी लाइन पर चल रहा है, उसे भी जल्द दुरुस्त करवा दिया जाएगा।

- विकास धनखड़, एक्सईएन, जनस्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग, भिवानी

चरखी दादरी। दूषित जलभराव को लेकर रोष प्रकट करते दुकानदार ।

शहीद मार्केट में जलभराव से परेशान दुकानदारों ने किया रोष-प्रदर्शन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

पुराना बस स्टैंड के समीप स्थित शहीद मार्केट में पिछले कई दिनों से सीवरेज ओवरफ्लो की समस्या के कारण दूषित जलभराव होने से दुकानदारों में भारी रोष व्याप्त है। मार्केट की मुख्य गली में गंदे पानी के भराव से जहां ग्राहकों की आवाजाही प्रभावित हो रही है, वहीं व्यापारियों को आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ रहा है। स्थिति यह है कि दुकानों के सामने बदबूदार पानी जमा होने से आमजन को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

इस गंभीर समस्या को लेकर नगर व्यापार मंडल के प्रधान सुरेश पांडवानिया व फैम के जिला अध्यक्ष जयभगवान मस्ताना की अध्यक्षता में दुकानदारों ने प्रशासन के खिलाफ रोष प्रकट किया। व्यापारियों ने मौके पर एकत्र होकर प्रशासन से शीघ्र समाधान की मांग की। उनका कहना है कि कई बार संबंधित विभाग को शिकायत देने के बावजूद अभी तक कोई स्थायी समाधान नहीं किया गया है, जिससे समस्या लगातार बनी हुई है। सुरेश पांडवानिया एवं जयभगवान मस्ताना में कहा कि शहीद मार्केट शहर का प्रमुख व्यावसायिक क्षेत्र है, जहां प्रतिदिन सैकड़ों लोग खरीदारी के लिए आते हैं। सीवरेज ओवरफ्लो के कारण फैले दूषित जल से न केवल व्यापार प्रभावित हो रहा है, बल्कि संक्रामक बीमारियों का खतरा भी बढ़ रहा है। उन्होंने प्रशासन से मांग की कि तुरंत प्रभाव से सीवरेज लाइन की सफाई करवाई जाए। दुकानदारों ने चेतावनी दी कि यदि शीघ्र कार्रवाई नहीं की गई तो वे मजबूरन बड़ा आंदोलन करने के लिए बाध्य होंगे। व्यापारियों ने कहा कि वे प्रशासन के सहयोग की अपेक्षा रखते हैं, लेकिन अनदेखी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। मार्केट के व्यापारियों ने प्रशासन से अपील की है कि जनहित को ध्यान में रखते हुए तत्काल प्रभाव से समस्या का समाधान कराया जाए।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर पवन, धर्मवीर, राजेश गर्ग, सतीश मित्तल, माडू सैनी, नफे सिंह, राहुल, शिवा, मयंक, मिश्रा, रोहित, संदीप, नवीन, अमन, सोनू गोयल, कैलाश चन्द सहित अनेकों दुकानदार उपस्थित थे ।

!! महायोगी गुरुगोरक्षनाथाय नमः!! !! श्री बाबा मस्तनाथो विजयतेतराम!!

गोरक्ष स्वरूप सिद्ध शिरोमणि
श्री बाबा मस्तनाथ जी महाराज

तपस्वी रणपतनाथ योगी जी

श्री बाबा मस्तनाथ मठ

तपस्वी मानधातानाथ योगी जी

BABA MASTNATH UNIVERSITY ROHTAK
विधेयम् जन सेवनम्
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय
अस्थल बोहर, रोहतक

सादर आमंत्रण

18वीं सदी से चली आ रही परम्परानुसार
सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी की पुण्यस्मृति में लगने वाला

श्रीयुत महंत
श्रेयोनाथ जी महाराज
पूर्व स्वास्थ्य मंत्री, हरियाणा सरकार

सालाना मेला व भण्डारा

ब्रह्मलीन महंत
चाँदनाथ जी महाराज
पूर्व सांसद, अलवर

दिनांक : 23, 24 व 25 फरवरी, 2026

तदनुसार फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष : सप्तमी, अष्टमी, नवमी (सोमवार, मंगलवार, बुधवार) को मनाया जा रहा है।

इस बहुआयामी आध्यात्मिक मेले में आप सभी सहपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

अतः सभी महानुभाव, साधु-संत, योगी-संन्यासी, माता बहनें, बच्चे-बुजुर्ग
एवं श्रद्धालु, परिजन-पूरजन-स्वजन के साथ पहुँचकर मेले का आनन्द उठाएँ तथा बाबा जी की दिव्य कृपा और आशीर्वाद प्राप्त करें।

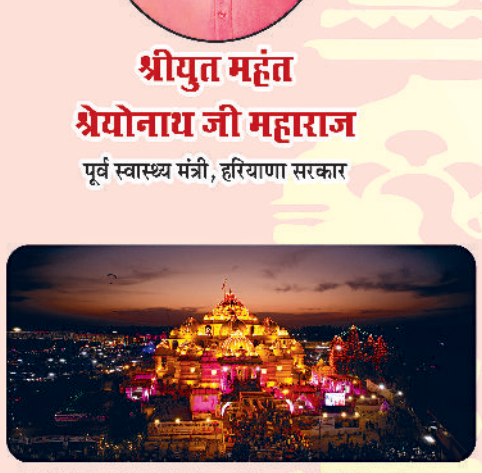

मेले के दौरान निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किये जाएंगे।

सर्कल कबड्डी
24 फरवरी, 2026

विशाल इनामी कुश्ती दंगल
25 फरवरी, 2026

महंत बालकनाथ योगी
गद्दीनशीन महंत श्री बाबा मस्तनाथ मठ, अस्थल बोहर, रोहतक-124021 (हरियाणा)
कुलाधिपति-बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय | विधायक-तिजारा एवं पूर्व सांसद, अलवर व पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष, भाजपा (राजस्थान)

सुरक्षित निवेश के कई मजबूत विकल्प, मिलेगा बढ़िया रिटर्न

- पीपीएफ, एनएससी, एससीएसएस और सुकन्या जैसी योजनाएं दे रही हैं आकर्षक ब्याज और टैक्स लाभ
- कम जोखिम में स्थिर आय और लंबी अवधि में मजबूत फंड बनाने के विकल्प
- बैंक एफडी से आगे बढ़कर सोचें, सरकारी योजनाओं में छिपा है बेहतर रिटर्न

बिजनेस डेस्क

आज के दौर में निवेशकों की सबसे बड़ी प्राथमिकता है पूंजी की सुरक्षा और स्थिर रिटर्न। शेयर बाजार की अस्थिरता से घबराने वाले या जोखिम कम लेना चाहने वाले लोग आमतौर पर बैंक एफडी का सहारा लेते हैं। लेकिन क्या एफडी ही एकमात्र सुरक्षित विकल्प है? असल में, सरकार समर्थित कई ऐसी योजनाएं हैं जो न केवल सुरक्षित हैं, बल्कि कई मामलों में एफडी से बेहतर ब्याज भी देती हैं। आइए जानते हैं ऐसे ही भरोसेमंद निवेश विकल्पों के बारे में, जहां सुरक्षा के साथ अच्छा रिटर्न भी मिल सकता है।

कंपाउंडिंग के लिए सबसे बेहतर

1. पब्लिक प्रोविडेंट फंड (पीपीएफ) अगर आपका लक्ष्य लंबी अवधि में सुरक्षित तरीके से बड़ा फंड बनाना है, तो पीपीएफ एक बेहतरीन विकल्प है।

- निवेश अवधिः 15 वर्ष
- वर्तमान ब्याज दर : 7.1% (सरकार द्वारा तिमाही आधार पर तय)
- अधिकतम निवेश : 1.5 लाख रुपये प्रति वर्ष
- टैक्स लाभ : धारा 80सी के तहत छूट
- पीपीएफ की सबसे बड़ी खासियत है इसका ईईईई स्टेटस निवेश, ब्याज और मैच्योरिटी राशि तीनों टैक्स-फ्री होती हैं। यह योजना खासकर उन निवेशकों के लिए उपयुक्त है जो रिटायरमेंट या बच्चों की उच्च शिक्षा जैसे दीर्घकालिक लक्ष्य के लिए सुरक्षित निवेश करना चाहते हैं।

2. नेशनल सेविंग सर्टिफिकेट (एनएससी)

- यदि आप 5 साल की अवधि के लिए सुरक्षित निवेश चाहते हैं, तो एनएससी एक अच्छा विकल्प हो सकता है।
- निवेश अवधि : 5 वर्ष
- ब्याज दर : लगभग 7.7%
- टैक्स लाभ : 80सी के तहत छूट
- एनएससी में निवेश की गई राशि सुरक्षित रहती है और तय ब्याज दर के अनुसार परिपक्वता पर रिटर्न मिलता है। यह योजना उन लोगों के लिए बेहतर है जो मध्यम अवधि के लक्ष्य के लिए निवेश करना चाहते हैं और जोखिम नहीं लेना चाहते।

3. सीनियर सिटीजन सेविंग स्कीम (एससीएसएस)

- यह योजना विशेष रूप से 60 वर्ष या उससे अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों के लिए है।
- निवेश अवधि : 5 वर्ष (आवश्यकतानुसार बढ़ाई जा सकती है)
- ब्याज दर : लगभग 8% से अधिक (तिमाही समीक्षा के अधीन)

नियमित ब्याज भुगतान

- एससीएसएस उन सेवानिवृत्त लोगों के लिए बेहद उपयोगी है जो अपने रिटायरमेंट फंड से नियमित आय चाहते हैं। ब्याज तिमाही आधार पर मिलता है, जिससे नकदी प्रवाह बना रहता है।

4. पोस्ट ऑफिस मंथली इनकम स्कीम (एमआईएस)

- अगर आप सुरक्षित निवेश के साथ हर महीने नियमित आय चाहते हैं, तो पोस्ट ऑफिस मंथली इनकम स्कीम एक बेहतर विकल्प है।
- निवेश अवधिः 5 वर्ष
- ब्याज दरः लगभग 7.4%
- मासिक ब्याज भुगतान

5. सुकन्या समृद्धि योजना (एसएसवाई)

- बेटियों के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए यह योजना विशेष रूप से बनाई गई है।
- पात्रताः 10 वर्ष या उससे कम आयु की बेटी
- निवेश अवधिः 15 वर्ष
- मैच्योरिटीः 21 वर्ष
- अधिकतम निवेशः 1.5 लाख रुपये प्रति वर्ष
- ब्याज दरः लगभग 8.2%
- एसएसवाई वर्तमान में सबसे अधिक ब्याज देती है।

एसआईपी संपत्ति निर्माण का एक आसान और व्यवस्थित तरीका बिना योजनाबद्ध निकासी निवेश को कर देती है बर्बाद

सिर्फ एसआईपी नहीं एसडब्लूपी भी जरूरी

बिजनेस डेस्क

जनवरी 2026 में निवेशकों ने सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिए म्यूचुअल फंड में 31,000 करोड़ रुपये का निवेश किया। एसआईपी अब आदत जैसी बन गई है। यह संपत्ति निर्माण का एक आसान और व्यवस्थित तरीका बन गया है। लेकिन असली परीक्षा तब शुरू होती है जब आप इसका उपयोग करना शुरू करते हैं। बिना योजनाबद्ध निकासी रणनीति के वर्षों का अनुशासित निवेश जल्दी ही बिखर सकता है। इसलिए हर एसआईपी के साथ एक सिस्टमैटिक विदड्रॉल प्लान (एसडब्लूपी) होना भी जरूरी है। एसआईपी संपत्ति संचय का एक प्रभावी साधन है, लेकिन यह सुचारु परिणाम की गारंटी नहीं देता। इसलिए एसआईपी से बाहर निकलने का समय बेहद महत्वपूर्ण होता है। इससे फर्क नहीं पड़ता कि आपका एसआईपी कितने समय तक चला या आपने इसे किस बाजार परिस्थिति में शुरू किया। अंतिम चरण में बाजार में गिरावट आपकी योजनाओं को पटरी से उतार सकती है। मान लीजिए एक निवेशक ने जनवरी 2005 में एसबीआई निफ्टी इंडेक्स फंड में 10,000 रुपये की मासिक एसआईपी शुरू की। लक्ष्य था 2020 के मध्य तक घर की डाउन पेमेंट के लिए 40 लाख रुपये जुटाना। 31 जनवरी 2020 तक 18 लाख रुपये का निवेश बढ़कर 40.73 लाख रुपये हो गया। लक्ष्य आसानी से हासिल होता दिख रहा था। फिर महामारी के कारण बाजार में गिरावट आई। 23 मार्च 2020 तक यह कॉर्पस घटकर 26 लाख रुपये रह गया यानी अचानक 14 लाख रुपये की कमी। पोर्टफोलियो को दोबारा संभलने में लगभग आठ महीने लग गए। यदि निवेशक ने लक्ष्य तिथि से 12-18 महीने पहले एसडब्लूपी के माध्यम से चरणबद्ध निकासी शुरू कर दी होती तो कुछ मुनाफा सुरक्षित किया जा सकता था। एसडब्लूपी मूलतः एसआईपी का उल्टा है। नियमित अंतराल पर निश्चित रकम निवेश करने के बजाय आप तय समयावधि में नियमित रूप से निश्चित राशि निकालते हैं। जैसे-जैसे लक्ष्य नजदीक आता है, एसडब्लूपी एक संतुलित और क्रमिक निकासी का मार्ग तैयार करता है।

एसडब्लूपी है वितरण की संरचना

इस संरचना के दो प्रमुख लाभ हैं। पहला यह अंतिम समय की बाजार अस्थिरता से अर्जित लाभ के एक हिस्से की सुरक्षा करता है। दूसरा जो राशि नहीं निकाली जाती, वह निवेशित बनी रहती है और अंतिम चरण में संभावित बढ़त का लाभ उठाती है। उद्योग के विशेषज्ञ अब एसआईपी और एसडब्लूपी को एक संयुक्त रणनीति के दो हिस्सों के रूप में देखते हैं। वे इस संयोजन को जीवन भर का एसआईपी बताते हैं। कमाई के वर्षों में व्यवस्थित बचत और आय कम होने पर व्यवस्थित निकासी, बिना चक्रवृद्धि की ताकत को तोड़े। असल में एसआईपी संचय का इंजन है, जबकि एसडब्लूपी वितरण की संरचना। यह दोनों मिलकर संपत्ति निर्माण, संरक्षण और वितरण का निरंतर चक्र बनाते हैं।

सेवानिवृत्ति से आगे की भी सोचें

परंपरागत रूप से एसडब्लूपी को रिटायरमेंट आय के साधन के रूप में देखा जाता रहा है, लेकिन यह धारणा बदल रही है। एसडब्लूपी जीवन के विभिन्न चरणों में एक लचीला और कर-कुशल नकदी प्रवाह समाधान बनकर उभर रहा है। यह लोन की ईएमआई, बच्चों की फीस या अनियमित आय से जुड़े जीवनशैली खर्च जैसे नियमित खर्चों में मदद कर सकता है। एसडब्लूपी फ्रीलांसर, कंसल्टेंट या चक्रीय आय वाले व्यवसायियों के लिए भी उपयोगी है। अधिक आय वाले महीनों में अतिरिक्त कमाई निवेश की जा सकती है, जबकि एक छोटा एसडब्लूपी निश्चित मासिक खर्चों के लिए स्थिर आय प्रदान कर सकता है। यहां तक कि एकमुश्त लक्ष्यों जैसे शादी या घर की मरम्मत के लिए भी एसडब्लूपी चरणबद्ध निकासी की सुविधा देता है, जिससे टाइमिंग जोखिम कम होता है और शेष पूंजी निवेशित बनी रहती है।

बकेट रणनीति भी बनाएं

रिटायरमेंट में हर फंड एसडब्लूपी के लिए उपयुक्त नहीं होता। विशेषज्ञ तीन-बकेट रणनीति सुझाते हैं। तीन साल के खर्च लिक्विड फंड में, चौथे से सातवें वर्ष के खर्च कंजरवेटिव हाइब्रिड फंड में और दीर्घकालिक निवेश इक्विटी में ताकि मुद्रास्फीति को मात दी जा सके। निकासी पहले बकेट से शुरू होती है। जैसे-जैसे वह कम होता है, दूसरे बकेट से उसे भरा जाता है और बाद में तीसरे बकेट से। यह स्तरीय संरचना निकट अवधि के खर्चों को इक्विटी की अस्थिरता से बचाती है और दीर्घकालिक वृद्धि को बनाए रखती है।

चक्र को पूरा करना जरूरी

हर वित्तीय यात्रा व्यक्तिगत लक्ष्यों, आय पैटर्न और जोखिम सहनशीलता से प्रभावित होती है। लेकिन सिद्धांत सार्वभौमिक है। वितरण योजना के बिना संचय अधूरा है। एसआईपी से एसडब्लूपी तक सुचारु संक्रमण आवश्यक है। सही तरीके से किया जाए तो यह साझेदारी चक्रवृद्धि की शक्ति को जारी रखते हुए आपको नियमित आय भी देती रहती है।

संक्रमण की योजना भी हो

विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि निवेश के तुरंत बाद एसडब्लूपी शुरू नहीं करना चाहिए। निकासी शुरू होने से पहले पोर्टफोलियो को बढ़ने का समय चाहिए। बहुत जल्दी शुरुआत करने से यदि बाजार अस्थिर हो जाए, तो मूलधन पर असर पड़ सकता है। कर दक्षता भी इसका एक बड़ा लाभ है। प्रत्येक एसडब्लूपी किस्त में मूलधन और पूंजीगत लाभ दोनों शामिल होते हैं, लेकिन कर केवल लाभ वाले हिस्से पर लगता है। कम से कम एक वर्ष तक निकासी टालने से इक्विटी निवेश दीर्घकालिक पूंजीगत लाभ कर के दायरे में आ जाता है, जिसमें सालाना 1.25 लाख रुपये तक के लाभ पर छूट मिलती है। अनिवार्य लक्ष्यों के लिए आदर्श रूप से लक्ष्य तिथि से 2-3 वर्ष पहले एसडब्लूपी शुरू कर देना चाहिए। भले ही कॉर्पस थोड़ा कम हो। अंतिम वर्ष तक इंतजार करने से जोखिम बढ़ जाता है। चरणबद्ध निकासी परिणामों को संतुलित बनाती है।

कितनी निकासी सुरक्षित है?

दीर्घकालिक स्थितियों जैसे सेवानिवृत्ति में निकासी दर यह तय करती है कि बचत 20-30 वर्षों तक चलेगी या समय से पहले खत्म हो जाएगी। जोखिम केवल बाजार की अस्थिरता नहीं, बल्कि सीक्वेंस-ऑफ-रिटर्न्स का भी होता है। यदि शुरुआती वर्षों में खराब रिटर्न के दौरान निकासी होती है तो कॉर्पस तेजी से घट सकता है। एसआईपी के विपरीत, जहां गिरते बाजार में अधिक यूनिट जमा होती हैं, एसडब्लूपी में गिरावट के दौरान समान नकदी प्रवाह के लिए अधिक यूनिट बेचनी पड़ती हैं। इसलिए निकासी दर संतुलित और सावधानीपूर्ण होनी चाहिए। आदर्श रूप से निकासी दर पोर्टफोलियो के दीर्घकालिक संभावित रिटर्न से कम होनी चाहिए। एक सामान्य नियम यह है कि निकासी वास्तविक रिटर्न यानी मुद्रास्फीति समायोजित रिटर्न के आधार पर तय हो। यदि अपेक्षित रिटर्न 10% और मुद्रास्फीति 5% है, तो निकासी 5% से अधिक नहीं होनी चाहिए। स्थिरता बनाए रखने के लिए निकासी दर अपेक्षित रिटर्न से 2-3 प्रतिशत अंक कम रखनी चाहिए। वैश्विक शोध अक्सर 3.5-4% को एक टिकाऊ दर मानता है, लेकिन इसकी उपयुक्तता एसेट आवंटन, जीवन प्रत्याशा और जीवनशैली की जरूरतों पर निर्भर करती है। प्रदर्शन के आधार पर समायोजित होने वाली डायनेमिक निकासी रणनीतियां भी मजबूती बढ़ा सकती हैं।

फंड तैयार करने की जल्दबाजी छोड़िए, एसआईपी को समय दें

बिजनेस डेस्क। सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) आज म्यूचुअल फंड में निवेश का सबसे लोकप्रिय तरीका बन चुका है। छोटे-छोटे मासिक निवेश के जरिए बड़ा फंड तैयार करने का यह अनुशासित माध्यम है। लेकिन एक सवाल लगभग हर निवेशक के मन में आता है। एसआईपी में रिटर्न असली रफ्तार कब पकड़ता है? कई निवेशक 1-2 साल में शानदार मुनाफे की उम्मीद करते हैं। अगर ऐसा नहीं होता, तो वे एसआईपी बंद भी कर देते हैं। जबकि सच्चाई यह है कि एसआईपी का असली फायदा समय के साथ खुलकर सामने आता है।

शॉर्ट टर्म में क्यों निराश कर सकता है एसआईपी?

अगर आप 1 से 3 साल की अवधि में एसआईपी का प्रदर्शन देखें, तो तस्वीर उतनी आकर्षक नहीं दिखती। ऐतिहासिक आंकड़ों के आधार पर निफ्टी 50 पर आधारित एसआईपी के रिटर्न का विश्लेषण बताता है कि छोटे समय में रिटर्न कई बार फ्लैट या निगेटिव भी रहा है।

कुछ अवधियों में

1. साल का एक्सआईआरआर रिटर्न -60% से ज्यादा तक गिरा
2. साल में -40% के आसपास
3. साल में -20% से ज्यादा गिरावट

शुरुआती रिटर्न कमजोर

यह सुनकर घबराहट होना स्वाभाविक है। लेकिन इसका कारण समझना जरूरी है। शेयर बाजार साइकिल में चलता है कभी तेजी, कभी गिरावट। यदि आपने एसआईपी की शुरुआत बाजार के ऊपरी स्तर पर की और उसके बाद गिरावट आई, तो शुरुआती रिटर्न कमजोर दिख सकते हैं। इसे ही टाइमिंग रिस्क कहते हैं। शॉर्ट टर्म में बाजार की दिशा आपके निवेश अनुभव को प्रभावित करती है।

5 साल के बाद बदलती है तस्वीर

- जैसे-जैसे निवेश की अवधि 5 साल के आसपास पहुंचती है, उतार-चढ़ाव का असर कम होने लगता है।
- 5 साल के अधिकांश रोलिंग पीरियड में एसआईपी का रिटर्न 5% से 10% के बीच रहा है। लंबी अवधि में रिकवरी का मौका मिलता है।

दो चीजें काम करती हैं

- रुपया लागत औसत : बाजार गिरने पर आपकी तय राशि से ज्यादा यूनिट्स मिलती हैं।
- कंपाउंडिंग : शुरुआती निवेश पर मिलने वाला रिटर्न आगे रिटर्न कमाता है।
- शुरुआती सालों की कमजोरी संतुलित होने लगती है और निवेश स्थिरता दिखाने लगता है।

7 साल के बाद बढ़ती है रफ्तार

- इतिहास बताता है कि 7 साल या उससे अधिक की अवधि में एसआईपी पर निगेटिव रिटर्न की संभावना लगभग खत्म हो जाती है। डबल डिजिट रिटर्न सामान्य हो जाते हैं। यहां सबसे बड़ा बदलाव बाजार में नहीं, बल्कि निवेशक के अनुभव में आता है। बाजार गिरता है, तो आपके पास रिकवरी का पर्याप्त समय होता है। तेजी आने पर आप उस पूरी रैली का हिस्सा बनते हैं। कंपाउंडिंग का प्रभाव स्पष्ट दिखने लगता है।

ऐसे समझें

उदाहरण के तौर पर, अगर कोई निवेशक हर महीने 10,000 रुपये एसआईपी करता है और औसतन 12% रिटर्न मिलता है, तो 3 साल में कुल निवेश 3.6 लाख पर फंड लगभग 4–4.5 लाख के आसपास हो सकता है। 10 साल में कुल निवेश 12 लाख पर फंड 23–24 लाख से ज्यादा हो सकता है। यही है कंपाउंडिंग की असली ताकत।

कब शुरू करें और कितना समय दें

- जितनी जल्दी शुरू करेंगे, उतना बेहतर।
- कम से कम 7–10 साल का नजरिया रखें।
- बाजार गिरने पर बंद न करें, जारी रखें।
- लक्ष्य आधारित निवेश करें।

असली रफ्तार कहां से

- पहले 2–3 सालः उतार-चढ़ाव
- 5 सालः स्थिरता
- 7 साल+: कंपाउंडिंग का प्रभाव
- 10 साल+: वास्तविक वेल्थ क्रिएशन

धैर्य ही असली रणनीति

एसआईपी कोई जादुई फार्मूला नहीं, बल्कि अनुशासित निवेश की प्रक्रिया है। छोटे समय में परिणाम आकर्षक न दिखें, लेकिन लंबी अवधि में यह प्रभावशाली बन जाता है। अगर आप बाजार के उतार-चढ़ाव को सहन करने का धैर्य रखते हैं और निवेश को 7–10 साल का समय देते हैं, तो एसआईपी मजबूत संपत्ति निर्माण करेगी।

क्या एसआईपी सच में बना सकती है अमीर?

नौकरीपेशा लोगों के लिए छोटी बचत को निवेश में बदलना व्यावहारिक तरीका

अनुशासन लंबे समय में संपत्ति निर्माण की रखता है नींव

बिजनेस डेस्क

आज के दौर में हर कमाने वाला व्यक्ति चाहता है कि उसकी आय सिर्फ खर्च तक सीमित न रहे, बल्कि भविष्य में बड़ी पूंजी में बदले। नौकरीपेशा लोगों के लिए हर महीने छोटी-छोटी बचत को निवेश में बदलना सबसे व्यावहारिक तरीका है। इसी संदर्भ में एसआईपी सबसे ज्यादा चर्चा में रहता है। लेकिन सवाल यह है क्या एसआईपी वास्तव में आपको अमीर बना सकती है? सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि एसआईपी कोई निवेश उत्पाद (प्रोडक्ट) नहीं, बल्कि निवेश करने का तरीका है। असल निवेश म्यूचुअल फंड में होता है और एसआईपी उस फंड में नियमित अंतराल पर तय रकम लगाने की प्रणाली है। यानी आप हर महीने एक निश्चित राशि निवेश करते हैं, चाहे बाजार ऊपर हो या नीचे। यही अनुशासन लंबे समय में संपत्ति निर्माण की नींव रखता है। अमीर बनने की संभावना इस बात पर निर्भर करती है कि आप कितने समय तक निवेश करते हैं और कितनी निरंतरता बनाए रखते हैं। शेयर बाजार से जुड़े फंड्स में ऐतिहासिक रूप से लंबी अवधि में बेहतर रिटर्न देखने को मिले हैं, लेकिन अल्पकाल में उतार-चढ़ाव स्वाभाविक है। जो निवेशक 8–10 साल या उससे अधिक का धैर्य रखते हैं, उन्हें चक्रवृद्धि का वास्तविक लाभ मिलता है। छोटी रकम भी समय के साथ बड़ी पूंजी में बदल सकती है। बशर्ते निवेश नियमित और दीर्घकालिक हो।

जल्दी अमीर बनने का शॉर्टकट नहीं

हालांकि, यह समझना भी जरूरी है कि एसआईपी "जल्दी अमीर बनने" का शॉर्टकट नहीं है। बाजार में गिरावट आएगी, रिटर्न कभी ज्यादा तो कभी कम होंगे। जो लोग कुछ महीनों में चमत्कार की उम्मीद करते हैं, वे अक्सर निराश होते हैं। असली ताकत अनुशासन और समय में छिपी है, न कि तात्कालिक मुनाफे में। जोखिम, रणनीति और समझदारी का संतुलन एसआईपी बाजार से जुड़ा निवेश है, इसलिए इसमें जोखिम भी शामिल है। यह फिक्स्ड डिपॉजिट या पीपीएफ की तरह पूरी तरह सुरक्षित विकल्प नहीं है। सही फंड का चयन, अपने जोखिम स्तर की पहचान और निवेश लक्ष्य की स्पष्टता बेहद जरूरी है। यदि आपका लक्ष्य 10-15 साल दूर है जैसे रिटायरमेंट या बच्चों की पढ़ाई तो इक्विटी आधारित फंड उपयुक्त हो सकते हैं, लेकिन कम अवधि के लक्ष्य के लिए संतुलित या डेट फंड बेहतर विकल्प हो सकते हैं।

बाजार गिरने पर घबराएं नहीं

बाजार गिरने पर घबराहट में एसआईपी रोक देना सबसे बड़ी गलती मानी जाती है। दरअसल, गिरावट के समय कम कीमत पर अधिक यूनिट मिलती हैं, जो बाजार सुधरने पर बेहतर रिटर्न दे सकती हैं। यही "रूपीकॉस्ट एवरेजिंग" का फायदा है। इसलिए समझदारी यही है कि उतार-चढ़ाव को निवेश यात्रा का हिस्सा मानें। एक और आम गलती है बहुत सारे फंड में निवेश कर देना। अलग-अलग सलाह के चक्कर में पोर्टफोलियो इतना जटिल हो जाता है कि निगरानी मुश्किल हो जाती है। बेहतर है कि अपने लक्ष्य के अनुसार सीमित और संतुलित फंड चुनें। गुणवत्ता पर ध्यान दें, संख्या पर नहीं। एसआईपी की एक बड़ी खूबी लचीलापन भी है। आपकी आय बढ़े तो निवेश राशि बढ़ा सकते हैं, जरूरत पड़े तो घटा या रोक भी सकते हैं। यह कोई कठोर अनुबंध नहीं है। लेकिन बार-बार बदलाव से बचना चाहिए; रणनीति सोच-समझकर तय करें।

यह जानना जरूरी

एसआईपी आपको रातोंरात अमीर नहीं बनाएगी, लेकिन समय, अनुशासन और सही रणनीति के साथ यह मजबूत संपत्ति निर्माण का प्रभावी साधन बन सकती है। समझदारी से किया गया निवेश, धैर्य और लक्ष्य-आधारित योजना यही वह सूत्र है जो सामान्य आय वाले व्यक्ति को भी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बना सकता है। अमीरी केवल बड़ी कमाई से नहीं, बल्कि सही निवेश आदतों से भी आती है।

ऑनलाइन शॉपिंग के दौर में यह सबसे लुभावना मौका

सस्ती किस्तों का जाल : क्या सच में 'नो कॉस्ट' है ईएमआई

ईएमआई में नहीं दिखता ब्याज, लेकिन कीमत बदल जाती है

जानकारी

बिजनेस डेस्क

ऑनलाइन शॉपिंग के दौर में एक लाइन सबसे ज्यादा लुभाती है वो है 'नो कॉस्ट' ईएमआई। छोटी-छोटी किस्तें देखकर खरीदारी का फैसला आसान लगने लगता है। दिमाग कहता है "इतनी सी ईएमआई है, अभी ले लेते हैं।" लेकिन निवेश और व्यक्तिगत वित्त के नजरिए से देखें तो 'नो कॉस्ट' ईएमआई उतनी सरल नहीं, जितनी दिखाई देती है। अब सवाल यह है कि क्या वाकई इसमें कोई लागत नहीं होती? या फिर लागत सिर्फ नजर नहीं आती?

'नो कॉस्ट' ईएमआई होती क्या है?

सरल शब्दों में, 'नो कॉस्ट' ईएमआई का मतलब है कि आप किसी प्रोडक्ट की कीमत किस्तों में चुकाते हैं और आपको अलग से ब्याज नहीं देना पड़ता। यानी कुल ईएमआई जोड़ने पर रकम उतनी ही होगी जितनी प्रोडक्ट की कीमत। लेकिन बैंक या फाइनेंस कंपनी बिना कमाई के पैसा उधार नहीं देती। तो फिर ब्याज कौन दे रहा है? यहीं से असली खेल शुरू होता है।

बैंक की कमाई कैसे होती है?

जब आप ईएमआई चुनते हैं, तो आमतौर पर प्रोडक्ट पर मिलने वाला सीधा डिस्काउंट कम कर दिया जाता है। उसी घटे हुए डिस्काउंट से बैंक का ब्याज एडजस्ट कर दिया जाता है। मतलब ये कि कागजों में आपको "ब्याज नहीं" दिखता है। लेकिन आपको मिलने वाला फायदा पहले ही कम कर दिया जाता है। बैंक को उसका हिस्सा मिल जाता है, और ग्राहक को लगता है कि वह बिना अतिरिक्त खर्च के सुविधा ले रहा है।

एक उदाहरण से समझिए

- मान लीजिए आप 60,000 रुपये का स्मार्टफोन खरीदना चाहते हैं।
- फुल पेमेंट पर ऑफरः 5,000 रुपये का सीधा डिस्काउंट
- अंतिम कीमतः 55,000 रुपये
- अब आप नो कॉस्ट ईएमआई चुनते हैं डिस्काउंट घटकर 2,500 रुपये रह जाता है
- नई कीमतः 57,500 रुपये
- आपने शुरुआत में ही 2,500 रुपये ज्यादा दे दिए।
- अगर इसमें 499 प्रोसेसिंग फीस और उस पर 18% जीएसटी जोड़ दें, तो कुल खर्च लगभग 58,000 रुपये से ऊपर पहुंच सकता है।
- दिखने में ईएमआई आसान थी, लेकिन कुल भुगतान बढ़ चुका है।

सबसे बड़ा भ्रम हैः ईएमआई

- सुविधा=सस्ता सौदा
- असल में ईएमआई सिर्फ भुगतान को छोटे हिस्सों में बांटती है। खर्च कम नहीं करती।
- छोटी ईएमआई दिमाग पर दबाव कम डालती है। एकमुश्त 55,000 देने से ज्यादा आसान लगता है 4,800 रुपये की मासिक किस्त देना। लेकिन कुल रकम का हिसाब अक्सर नजरअंदाज हो जाता है।
- यह मनोवैज्ञानिक प्रभाव है—छोटे नंबर कम डराते हैं।
- छिपे हुए चार्ज जिन पर कम ध्यान जाता है

ये अतिरिक्त खर्च संभव

- प्रोसेसिंग फीस : 199 से 999 रुपये या उससे अधिक
- जीएसटी : प्रोसेसिंग फीस या ब्याज वाले हिस्से पर 18%
- ईएमआई कन्वर्जन चार्ज

- लेट पेमेंट पेनल्टी (यदि किस्त समय पर न भरी जाए)
- ये सभी बातें अक्सर शर्तों में छिपी होती हैं, प्रोडक्ट पेज पर बड़े अक्षरों में नहीं लिखी होतीं।
- तुलनाः फुल पेमेंट बनाम नो कॉस्ट ईएमआई
- भुगतान तरीका दिखने वाली कीमत संभावित असली खर्च
- फुल पेमेंट 55,000 55,000
- नो कॉस्ट ईएमआई 57,500 58,000+

यह अंतर छोटा लग सकता है, लेकिन महंगे इलेक्ट्रॉनिक्स, फर्नीचर या एसी जैसे उत्पादों में यह हजारों रुपये तक पहुंच सकता है।

कब नो कॉस्ट ईएमआई सही विकल्प

हर बार नो कॉस्ट ईएमआई गलत नहीं होती। कुछ परिस्थितियों में यह उपयोगी हो सकती है। आपके पास पूरी रकम उपलब्ध नहीं है। ईएमआई लेने से डिस्काउंट कम नहीं हो रहा। प्रोसेसिंग फीस शून्य है। आप कैश फ्लो मैनेजमेंट के लिए भुगतान फैलाना चाहते हैं। अगर इन शर्तों में से अधिकतर पूरी होती हैं, तो ईएमआई एक व्यावहारिक विकल्प हो सकता है।

निवेश के नजरिए से

व्यक्तिगत वित्त का एक मूल सिद्धांत है खर्च से पहले गणित करें। यदि आपके पास पर्याप्त बचत है और आप फुल पेमेंट कर सकते हैं, तो अक्सर वह सस्ता विकल्प होता है। ईएमआई चुनने से पहले यह सोचें।

सोचें क्या यह जरूरत है

- क्या ईएमआई के कारण मैं अतिरिक्त खर्च कर रहा हूं?
- क्या मैं कई ईएमआई का बोझ एक साथ उठा रहा हूं?
- कई बार लोग एक साथ 3-4 ईएमआई ले लेते हैं। छोटी-छोटी किस्तें मिलकर बड़ी मासिक देनदारी बन जाती हैं।

मार्केटिंग बनाम समझदारी

आज का ई-कॉमर्स माहौल भावनात्मक फैसले लेने को प्रेरित करता है। अभी खरीदें, बाद में भुगतान करें। लेकिन समझदार खरीदार पहले कैलकुलेशन करता है, फिर निर्णय लेता है। नो कॉस्ट ईएमआई धोखा नहीं है, लेकिन अधूरी जानकारी नुकसान में बदल सकती है। नो कॉस्ट ईएमआई सुविधा देती है, लेकिन हर सुविधा की एक कीमत होती है चाहे वह सीधी दिखे या छिपी हुई हो। इसलिए पहले पूरा गणित समझें, कुल भुगतान जोड़ें, और फिर फैसला लें। क्योंकि समझदारी से किया गया खर्च ही असली बचत है।

खबर संक्षेप

संघ ने दिया राष्ट्रसेवा और सामाजिक में योगदान

भिवानी। बापोड़ा में शनिवार को श्री पंचवीर गोशाला डाबर धाम परिसर में श्री पंचवीर गोशाला आयोजन समिति के तत्वावधान में एक हिंदू सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता सामाजिक कार्यकर्ता वरुण बजरंगी रहे। मुख्य वक्ता वरुण बजरंगी ने स्वयंसेवक संघ की 100 वर्षों की यात्रा पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि संघ ने बीते एक शताब्दी में राष्ट्र सेवा, सामाजिक संगठन, आपदा राहत, शिक्षा एवं संस्कार निर्माण जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दिया है। उन्होंने बताया कि संघ का उद्देश्य समाज को संगठित कर राष्ट्र को सशक्त बनाना है। उन्होंने संघ के प्रतिपादित पंच परिवर्तन सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण, स्वदेशी जीवन शैली और नागरिक कर्तव्यों के प्रति जागरूकता पर विशेष जोर दिया।

चौ. बंसीलाल कॉलेज में जागरूकता कार्यक्रम कल

लोहारू। चौ बंसीलाल राजकीय महाविद्यालय में 23 व 24 फरवरी को एनटीएफ प्रकोष्ठ के तहत मानसिक स्वास्थ्य और व्यवहार पर उसका प्रभाव विषय पर दो दिवसीय जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा।

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हरियाणा के खिलाड़ी कर रहे उम्दा प्रदर्शन

ऐसी प्रतियोगिताएं ग्रामीण प्रतिभाओं को बेहतरीन मंच प्रदान करती हैं: दलाल

सरपंच दौड़ में चैहड़ के सरपंच रहे अव्वल

बहल। आयोजित खेलकूद प्रतियोगिता की कबड्डी मैच में दमखम दिखाते हुए तथा प्रतिभागियों को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

- ग्रामीण प्रतिभाओं ने अंतरराष्ट्रीय स्तर तक अपनी पहचान बनाई
- खेल नीति से प्रदेश में खिलाड़ियों को बेहतरीन माहौल और सुविधाएं मिली

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहल

बीआरसीएम शिक्षण समिति द्वारा आयोजित 12वें छोगमल चौधरी ग्रामीण खेल महोत्सव का राजीव गांधी ग्रामीण खेल परिसर में शुभारंभ किया गया। खेल महोत्सव में 100 मीटर सरपंच दौड़ के हुए रोमांचक मुकाबलों में राजेश कुमार चैहड़ खुर्द ने प्रथम, सोमवीर सोरड़ा ने द्वितीय व संजय मतानी ने तृतीय स्थान हासिल किया। वहीं, बुजुर्ग दौड़ में जोगेन्द्र सिंह प्रथम, महासिंह द्वितीय व दरियासिंह तृतीय स्थान पर रहे। उसके बाद छात्राओं के कबड्डी मैचों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रदेश के पूर्व कृषि मंत्री जेपी दलाल ने किया।

शनिवार को खेल महोत्सव का शुभारंभ बीआरसीएम संस्थानों की एनसीसी, स्काउट्स एवं एनएसएस इकाइयों के मार्चपास्ट व विद्यार्थियों द्वारा पेश की गई सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ हुआ। खेलों के शुभारंभ पर खिलाड़ियों को संदेश देते हुए मुख्यातिथि जेपी दलाल ने कहा कि ऐसी प्रतियोगिताएं ग्रामीण प्रतिभाओं को बेहतरीन मंच प्रदान करती है। ऐसी प्रतियोगिताओं से निखर कर ग्रामीण प्रतिभाओं ने अंतरराष्ट्रीय स्तर तक अपनी पहचान बनाई है।

उन्होंने बीआरसीएम शिक्षण समिति द्वारा शिक्षा एवं ग्रामीण खेल संस्कृति को निरंतर प्रोत्साहित किए जाने की सराहना की। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार की खेल नीति की सराहना करते हुए कहा कि भाजपा सरकार की खेल नीति से प्रदेश में खिलाड़ियों को बेहतरीन माहौल और सुविधाएं मिली है जिसकी बदौलत राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की हरियाणा प्रदेश के खिलाड़ी उम्दा प्रदर्शन कर रहे हैं।

सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद

बीआरसीएम शिक्षण समिति के निदेशक डॉ. एसके सिन्हा ने कहा कि बीआरसीएम शिक्षण समिति शिक्षा के साथ खेलों को भी समान महत्व देते हुए युवाओं के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध है। कार्यक्रम में असन कुमार सांगवान व अर्जुन एवं द्रोणाचार्य अवार्डी जगदीश सिंह सहित अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी उपस्थित रहे।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर निदेशक डॉ. एसके सिन्हा, जिला खेल अधिकारी विद्यानंद, मारूति टेक्सटाइल सूरत के मुख्य वित्त अधिकारी राजकुमार त्रिपाठी, एशियन गेम्स गोल्ड मेडलिस्ट सुखबीर सांगवान, रजत पदक विजेता सोनिका चहल, सरपंच साधूराम पनिहार, भाजपा नेता पूर्व सरपंच गजानंद अग्रवाल, अजय बिधनोई, प्राचार्य डॉ. अनुज शर्मा, डॉ. सुनील शुक्ला, राजेश झाझडिया, मुख्याध्यापक संदीप टंडनल, रजिस्ट्रार पवन पंघाल, रणसिंह गाढा सहित अनेक लोग मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

41 ग्रामीण युवाओं ने उत्साहपूर्वक किया रक्तदान

भिवानी। बाबा पंचपीर गौशाला में एम्स बाड़सा की टीम के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया। शिविर का आयोजन गांव बापौड़ा, बीरण और दांग खुर्द के ग्रामीणों के संयुक्त प्रयास से किया, जिसमें 41 युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर मानव सेवा का संदेश दिया। शिविर का शुभारंभ गौशाला प्रधान पवन शर्मा ने किया। उन्होंने रक्तदाताओं को प्रमाण-पत्र एवं बैज प्रदान कर सम्मानित किया तथा कहा कि रक्तदान जीवन बचाने का सबसे सरल और महान माध्यम है। उन्होंने बताया कि शिविर बाबा पंचपीर गौशाला के सहयोग से पहली बार आयोजित किया, जिसमें ग्रामीणों का विशेष सहयोग देखने को मिला। शतकवीर रक्तदाता राजेश डुडेजा व संबंधित ग्राम पंचायतों के सरपंचों ने कहा कि रक्तदान से बड़ी कोई सेवा नहीं है और प्रत्येक युवा को इस पुनीत कार्य में आगे आना चाहिए।

मातृभाषा दिवस पर बच्चों ने दिखाई प्रतिभा

चरखी दादरी। गांव डोहका दीना स्थित राजकीय प्राथमिक पाठशाला में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस बड़े ही उत्साह के साथ मनाया। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्कूल प्रबंधन समिति (एसएमसी) के प्रधान बीरसिंह खटक और स्कूल मुखिया रामपाल रामबास ने की। बच्चों को अपनी मातृभाषा के महत्व और उसकी सांस्कृतिक विरासत से अवगत करवाया। मुखिया रामपाल ने कहा कि सरकार द्वारा इस कार्यक्रम के आयोजन का मुख्य उद्देश्य भाषा विविधता और सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाना है। उन्होंने कहा कि अपनी मातृभाषा में शिक्षा ग्रहण करने से बच्चों के शैक्षिक परिणामों में न केवल सुधार होता है, बल्कि विषय पर उनकी पकड़ भी मजबूत होती है। दिवस के उपलक्ष्य में विद्यालय में विभिन्न भाषाई गतिविधियों और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया, जिसमें बाल वाटिका से लेकर पांचवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

सीपीआईयू में सीआरसी ने उपस्थिजनों में भरा जोश

बवानीखेड़ा। राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में प्राथमिक विद्यालय सीपीआईयू बैठक का आयोजन किया गया। कलस्टर एबीआरसी राज कुमारी के आहवान पर बैठक में कलस्टर के 14 विद्यालयों के शिक्षकों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। बैठक में सीआरसी संतोष भाकर द्वारा सैंसस असैसमेंट परिणाम पर चर्चा, आगामी माह में कक्षा तीसरी के लिए होने वाली राष्ट्रीय स्तर की एफएएस की असैसमेंट की तैयारियों बारे, पुिण हरियाणा डैशबोउ के माध्यम से यात्रा लक्ष्य का अनुपालन करने, छात्र संख्या बढ़ाने, शिक्षक हैंडआउट और समग्र प्रगति कार्ड, पहली से तीसरी कक्षा के लिए ऍप पर आईडी कार्ड डाटा अपडेट करने सहित अन्य बारे चर्चा की गई। उन्होंने सभी शिक्षकों को बताया कि जो सूचनाएं विभाग कलस्टर के माध्यम से मांगता है उसे समय पर दें ताकि कलस्टर का कार्य सही समय पर पूरा हो सके। सभी ने सीआरसी के आदेशों की पालना करने की बात की।

राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल प्रवेश परीक्षा में सफलता अलार इंस्टिट्यूट द्वारा रोड शो का आयोजन

चरखी दादरी। दादरी के प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान अलार इंस्टिट्यूट द्वारा राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल प्रवेश परीक्षा 2025 में चयनित छात्र मयंक और चिराग सुपुत्र विक्रम की शानदार सफलता के उपलक्ष्य में एक भव्य रोड शो का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सैनिक स्कूल परीक्षा एवं ओलंपियाड में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले अन्य छात्रों को भी सम्मानित किया गया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. अरुण श्योराण एवं चेयरमैन श्री बलबीर सिंह पूर्व खंड शिक्षा अधिकारी ने छात्र-छात्राओं को सम्मानित करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। रोड शो के दौरान संस्थान के विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शहर के गणमान्य व्यक्तियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और छात्रों की इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया।

बवानीखेड़ा खंड के प्राथमिक विद्यालयों में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का हुआ आयोजन

बवानीखेड़ा। खंड बवानीखेड़ा के अंतर्गत आने वाले राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का आयोजन किया गया। बवानीखेड़ा कलस्टर सीआरसी संतोष भाकर द्वारा खंड शिक्षा अधिकारी सतेन्द्र कुमार के आदेशानुसार कलस्टर के सभी प्राथमिक पाठशालाओं के मुखियाओं को एबीआरसी राज कुमारी के माध्यम से इस कार्यक्रम के आयोजन के आदेश दिए। सभी प्राथमिक विद्यालयों में विद्यालय स्टाफ द्वारा माता-पिता की सहभागिता के साथ इस दिवस को उत्साह के साथ माया। प्राचार्या संतोष भाकर ने बताया कि कार्यक्रम का मकसद विविधता और सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के बारे जागरूकता फैलाना रहा।

पक्षियों के संरक्षण पर दिया संदेश, नेहरू हाई स्कूल में हुआ घोंसला बनाओ प्रतियोगिता का आयोजन

चरखी दादरी। शहर के सुभाष चौक स्थित नेहरू हाई स्कूल में पक्षियों के संरक्षण और पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से घोसला बनाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और अपनी रचनात्मकता का परिचय देते हुए विभिन्न प्रकार के सुंदर व आकर्षक घोंसले तैयार किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए स्कूल निदेशक जिले सिंह यादव ने कहा कि बढ़ते शहरीकरण और पेड़ों की कटाई के कारण पक्षियों के प्राकृतिक आवास लगातार कम होते जा रहे हैं। ऐसे में कृत्रिम घोंसले बनाकर पक्षियों को सुरक्षित आश्रय उपलब्ध कराना हम सबकी जिम्मेदारी है। उन्होंने बच्चों के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि इस तरह की गतिविधियां न केवल रचनात्मकता को बढ़ाती हैं, बल्कि प्रकृति के प्रति संवेदनशील भी बनाती हैं।

गर्भवती महिलाओं को पोषण किट वितरित कर किया सम्मानित

भिवानी। हनुमान ढाणी स्थित आंगनबाड़ी केंद्र में गर्भवती महिलाओं के सम्मान में गोद भराई कार्यक्रम का आयोजन उत्साह और गरिमा के साथ किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य मातृ स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा गर्भवती महिलाओं को पोषण, स्वच्छता और नियमित जांच के प्रति प्रेरित करना रहा। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में सुपरवाइजर प्रगति कुमारी ने कहा कि गर्भावस्था के दौरान संतुलित आहार, समय-समय पर स्वास्थ्य जांच और सकारात्मक वातावरण बेहद आवश्यक है। उन्होंने सरकार द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारी देते हुए महिलाओं से इनका लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने आंगनबाड़ी केंद्रों की भूमिका को मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण बताया। कार्यक्रम में आंगनवाड़ी कार्यकर्ता दर्शना देवी, अमर नगर टीबा बस्ती आंगनबाड़ी कार्यकर्ता किरण तथा कार्यकर्ता उर्मिला का विशेष योगदान रहा। उन्होंने गर्भवती महिलाओं को पोषण किट वितरित कर उनका सम्मान किया तथा पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ गोद भराई की रस्म संपन्न कराई।

एडवोकेट को धमकी देने वाले के खिलाफ कारवाई करने की मांग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

अखिल भारतीय किसान सभा भिवानी की जिला कमेटी की बैठक शहीद भगत सिंह यादगार भवन भिवानी में हुई , बैठक की अध्यक्षता किसान सभा के जिला प्रधान रामफल देशवाल ने की । मंच संचालन जिला सचिव मास्टर जगरोशन रोढ़ा ने की । बैठक में सर्व सम्मति से एडवोकेट अशोक आर्य को टेलिफोन पर किसी ने जान स मारने की धमकी दी है , उसकी कड़े शब्दों में निंदा की है तथा जिला पुलिस प्रशासन से आरोपी के विरुद्ध कठोर कानूनी कार्यवाही करने की मांग की है । किसान नेताओं ने कहा कि एक वकील होने के नाते वे किसी भी कलाईंट की वकालत कर सकते हैं , उनका यह अधिकार कोई छीन नहीं सकता।

बैठक में सभा की सदस्यता अभियान चलाने , बीमा फ्राड आन्दोलन को जारी रखने , हाल ही में तीन दर्जन गांव में जल भराव/बाढ़ का मुआवजा देने और 24 मार्च को रामलीला मैदान दिल्ली में जवलन्त मुद्दों को लेकर किसान मजदूरों की रैली में भाग लेने का निर्णय लिया है । इस दौरान किसान सभा ने शासक पार्टी व मुख्य विपक्ष के नेताओं से मिलकर 350 करोड़ रुपये बीमा फ्राड व जल भराव मुआवजे को लेकर विधान सभा में उठाने हेतु उनसे ज्ञापन देगी । किसान सभा के राज्य महासचिव सुमित दलाल ने बैठक को सम्बोधित करते हुए बताया कि आज केंद्र सरकार किसान मजदूरों विरोधी कानून तेजी से ला रही है।

बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती को लेकर हुई मीटिंग, किया मंथन

चरखी दादरी। भारतरत्न बाबा साहेब डॉ भीमराव अंबेडकर जयंती समारोह को लेकर तैयारियों को तेज है। पूरे जिले के विभिन्न सामाजिक संगठनों के सहयोग से जिला स्तरीय आयोजन होगा। इस संबंध में रोज गार्डन में विभिन्न संगठनों की मीटिंग हुई, जिसकी अध्यक्षता रामनारायण चरखी ने की। समारोह को लेकर जानकारी देते हुए जोगेंदर सिंह पूर्व सरपंच खेड़ी बूरा ने बताया इस वर्ष डॉ अम्बेडकर जयंती के उपलक्ष्य में जिला स्तरीय भव्य समारोह किया जाएगा। जिला मुख्यालय पर यह समारोह आगामी 13 अप्रैल को आयोजित किया जाएगा। उस दिन कार्यक्रमों के तहत शाम के समय पूरे शहर में शोभा यात्रा निकली जाएगी। इसके अलावा अन्य सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों को लेकर भी आयोजित किए जाने का प्रयास रहेगा। समाज के मौजिज लोगो द्वारा विचार गोष्ठी के माध्यम से बाबा साहेब के जीवन व आदर्शों पर विचार रखे जाएंगे। बैठक के दौरान जिला स्तरीय जयंती समारोह की सफल बनाने के लिए आयोजन कमेटी का गठन किया, जिसकी अगुवाई व अध्यक्षता की जिम्मेदारी जगदीश राय पूर्व सरपंच अटेला कलां को सौंपी।

एचपीएससी के बाहरी युवाओं के चयन पर युवाओं में बढ़ी निराश: अनिल

चरखी दादरी। एचपीएससी द्वारा बाहरी युवाओं के चयन से न केवल स्थानीय युवाओं में निराशा बढ़ रही है अपितु बाहरी उम्मीदवारों के चयन से हरियाणा का प्रशासन पंगु हो गया है। सरकारी दफ्तरों में भ्रष्टाचार चरम पर है। हरियाणा देश के 28 प्रदेशों में अकेला ऐसा प्रदेश है, जहां एचपीएससी चेयरमैन बाहर से लाकर बनाया गया। दूसरा ऐसा कोई प्रदेश नहीं है जहां पब्लिक सर्विस कमीशन का चेयरमैन उस प्रदेश की बजाए किसी दूसरे प्रदेश का बनाया गया हो, ये बात लोहारू रोड स्थित अपने कार्यालय में कांग्रेस नेता अनिल धनखड़ ने कही। धनखड़ ने कहा कि जब से बाहर के प्रदेश से लाकर एचपीएससी चैयरमैन बनाया गया है तब से ज्यादातर अन्य प्रदेशों के बच्चे ही चयनित हो रहे हैं, जबकि अन्य प्रदेशों में वहाँ की सरकारें अपने राज्य के युवाओं को नौकरियों में प्राथमिकता देती है। धनखड़ ने कहा कि सोची समझी साजिश के तहत प्रदेश के युवावर्ग का हक मारा जा रहा है और जिन वर्गों को आरक्षण का लाभ मिलता है, उनके साथ भी बड़ा धोखा हो रहा है। हरियाणा के युवा डंकी रूट से पलायन कर रहे और हरियाणा में ग्रुप ए, बी, सी की नौकरियों का पलायन दूसरे प्रदेशों में हो रहा है। हरियाणा के बाहर के प्रदेशों के बच्चों के चयन किया गया है।

प्रशिक्षण से सशक्त होगा संगठन, सेवा से सशक्त होगा राष्ट्र: सुरेंद्र पुनिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी। द्वीप प्रज्जवलित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

भारतीय जनता पार्टी के जिला कार्यालय भिवानी में आज संगठनात्मक सशक्तिकरण और वैचारिक मजबूती को समर्पित एक विस्तृत बैठक का आयोजन किया गया। यह बैठक पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाअभियान 2026 के अंतर्गत आयोजित की गई, जिसमें जिला एवं मंडल स्तर के पदाधिकारियों सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता भाजपा जिला अध्यक्ष वीरेंद्र कौशिक ने की। मुख्य वक्ता के रूप में प्रदेश महामंत्री सुरेन्द्र पुनिया ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह प्रशिक्षण महाअभियान केवल औपचारिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि संगठन के विचार, कार्यशैली और अनुशासन को नई ऊर्जा देने का अभियान है। उन्होंने पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद का उल्लेख करते हुए कहा कि भाजपा का मूल उद्देश्य अंत्योदय के भाव से समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास पहुँचाना है। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण से कार्यकर्ताओं में वैचारिक स्पष्टता, नेतृत्व क्षमता और संगठनात्मक दक्षता का विकास होता है। मंडल और बूथ स्तर तक इस अभियान को प्रभावी रूप से लागू करने का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि प्रशिक्षित कार्यकर्ता ही संगठन की सच्ची शक्ति होते हैं।

विद्यार्थियों को हिन्दी के प्रति किया जागरूक

- विद्यार्थियों ने हर्षोल्लास से मनाया अंतरराष्ट्रीय भाषा दिवस

चरखी दादरी। गांव चरखी स्थित विवेकानन्द हाई स्कूल में अंतर्राष्ट्रीय भाषा दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में मातृभाषा हिन्दी के प्रति प्रेम, सम्मान और जागरूकता को बढ़ावा देना रहा। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। कार्यक्रम के अंतर्गत बच्चों ने भाषा के विकास, प्रचार-प्रसार तथा उसके महत्व पर विशेष प्रकाश डाला। विद्यार्थियों ने कविता-पाठ, भाषण एवं नाटक प्रस्तुत कर उपस्थित जनसमूह का मन मोह लिया। कक्षा पांचवीं की छवि, कक्षा तीसरी की प्रियांशी तथा चौथी के यश सहित अन्य विद्यार्थियों ने प्रभावशाली प्रस्तुतियां दीं। इस अवसर पर स्वामी विवेकानन्द एजुकेशन सोसायटी के अध्यक्ष राजेश सांगवान, सचिव सुनीता शर्मा एवं कोषाध्यक्ष सविना देवी विशेष रूप से उपस्थित रहे। विद्यालय की प्रधानाचार्या दिया आँचल और सुमन सांगवान पीजीटी हिन्दी अध्यापिका ने अपने प्रेरणादायक संबोधन में विद्यार्थियों को मातृभाषा के महत्व को समझने तथा उसे अपने दैनिक जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित किया।

गौड़ 25 साल से कुरीतियों के खिलाफ चला रहे अभियान

लक्ष्मण गौड़ को किया सम्मानित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी। शिक्षक लक्ष्मण गौड़ को सम्मानित करती प्राचार्या सीमा कुमारी।

गांव दिनोद के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षक लक्ष्मण गौड़ को उनकी सामाजिक सेवा व उत्कृष्ट कार्यों के लिए स्कूल परिवार ने सम्मानित किया। उनके सम्मान में समारोह का आयोजन किया, जिसमें बतौर मुख्यतिथि स्कूल की प्राचार्या सीमा कुमारी तथा अध्यक्षता प्रवक्ता प्रसेन सिंह चौहान ने की। प्राचार्या सीमा कुमारी, प्रवक्ता प्रसेन सिंह चौहान सहित स्टाफ सदस्यों ने शिक्षक लक्ष्मण गौड़ को सम्मानित किया।

प्राचार्या सीमा कुमारी ने कहा कि राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री अवार्डी अध्यापक लक्ष्मण गौड़ लगातार 25 वर्षों से देशभक्ति, छात्र उत्थान, शिक्षा, खेल, समाजसेवा एवं प्रशासन सहयोग के साथ-साथ सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ लोगों को जागरूक करने का काम कर रहे हैं और अपनी अहम भूमिका निभाते हैं, ये हमारे विद्यालय के लिए गर्व की बात है।

नप चेयरमैन बख्शी राम ने किया निरीक्षण, लोगों से किया संवाद

चरखी दादरी। शहर में चल रहे विकास कार्यों की गुणवत्ता और प्रगति सुनिश्चित करने के लिए नगर परिषद चेयरमैन बख्शी राम सैनी गंभीर हैं। उन्होंने शनिवार को वार्ड नंबर 18 में निर्माणाधीन गली का निरीक्षण किया और मौके पर मौजूद लोगों से संवाद कर उनकी समस्याएं व सुझाव सुने। निरीक्षण के दौरान चेयरमैन ने संबंधित अधिकारियों व ठेकेदार को निर्देश दिए कि निर्माण कार्य तय समय सीमा में और गुणवत्ता मानकों के अनुरूप पूरा किया जाए। उन्होंने कहा कि विकास कार्यों में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। क्षेत्र के लोगों ने गली निर्माण को लेकर संतोष व्यक्त करते हुए कुछ अन्य आवश्यकताओं से भी अवगत कराया, जिस पर चेयरमैन ने सकारात्मक कार्रवाई का आश्वासन दिया है। इस अवसर पर पार्षद अंजू देवी, पार्षद प्रतिनिधि कुलदीप गांधी, जयपाल सैनी और प्रवीण स्वामी उपस्थित रहे। जनप्रतिनिधियों ने मिलकर क्षेत्र के विकास को प्राथमिकता देने की बात कही। चेयरमैन बख्शी राम सैनी ने कहा कि नगर परिषद शहर के प्रत्येक वार्ड में समान रूप से विकास कार्य करवाने के लिए प्रतिबद्ध है।

बाबा मुंगीपा हिंदू सेवा समिति द्वारा हिंदू सम्मेलन आज

तोशाम। तोशाम की बाबा मुंगीपा हिंदू सेवा समिति द्वारा रविवार 22 फरवरी को स्थानीय सनातन धर्म मंदिर में हिंदू सम्मेलन आयोजित होगा। इस दौरान हवन-यज्ञ आयोजित कर प्रसाद वितरित किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि हिंदू जागरण की दिशा को नई ऊर्जा एवं चेतना प्रदान करने के लिए देशभर में सर्व हिंदू समाज द्वारा सनातन संस्कृति सनातन धर्म एवं सामाजिक एकता के प्रतीक हिंदू सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इसी कड़ी में बाबा मुंगीपा हिंदू सेवा समिति तोशाम द्वारा भी रविवार 22 फरवरी को तोशाम के सनातन धर्म मंदिर में हिंदू सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। इस दौरान हिंदू सम्मेलन के साथ हवन-यज्ञ तथा प्रसाद वितरीत किया जाएगा।

खबर संक्षेप

भक्ति भाव से आते हैं अच्छे संस्कार : महादेव बलाली

बाढड़ा। खंड के गांव द्वारका स्थित माता मसानी मंदिर में भगवान शिव और श्रीकृष्णा की पवित्र मूर्तियों की स्थापना के शुभ अवसर पर भव्य धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्यवक्ता के रूप में उपस्थित समाज सेवी महादेव बलाली ने आध्यात्मिकता, सामाजिक एकता और सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भक्ति भाव से व्यक्ति के अंदर अच्छे संस्कार विकसित होते हैं जोकि हमें बुराइयों से बचने में सहयोग करते हैं।

मेजर जनरल योगी श्योराण का स्वागत

बाढ़ड़ा। इंडियन आर्मी के मेजर जनरल योगी श्योराण ने शनिवार कस्बे के मुख्य क्रांतिकारी चौक पर पहुंच कर महाशय मंसाराम व राजा महताब सिंह की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण कर उनको नमन कर आशीर्वाद लिया। कस्बे में पहुंचने पर सामाजिक संगठनों ने उनका भव्य स्वागत किया। गांव धनासरी निवासी भारतीय सेना के मेजर जनरल योगी श्योराण जब कस्बे के मुख्य क्रांतिकारी चौक पर पहुंचे तो श्योराण खाप पच्चीस अध्यक्ष बिजेंद्र श्योराण बेरला, पूर्व सरपंच सुरेश धनासरी, प्रदेश के सहायक श्रमायुक्त चंद्रपाल शयोराण, दी केंद्रीय सहकारी बैंक भिवानी के चेयरमैन सुधीर चांदवास, वेद शयोराण की अगुवाई में दोनों गांवों के मौजिज पंचायत प्रतिनिधियों ने भव्य स्वागत किया।

सूर्यनमस्कार शरीर के लिए बहुत लाभदायक

बवानीखेड़ा। नित्य प्रतिदिन योग प्राणायाम सूर्यनमस्कार करना हमारे शरीर के लिए बहुत लाभदायक होता है, इसमें भी परीक्षा के मौसम में विद्यार्थियों द्वारा यदि प्रतिदिन अनुलोम विलोम प्राणायाम किया जाये तो निसंदेह परीक्षा में सफलता प्राप्त की जा सकती है उक्त संदेश देते हुए आयुष विभाग भिवानी खंड बवानी खेड़ा के सज्जनपुर (दुर्जनपुर) की व्यायामशाला इंचार्ज,आयुष आरोग्य मंदिर में कार्यरत आयुष योग सहायक गजानंद कौशिक ने बताया कि परीक्षा में यदि बच्चों को और अधिक सफलता प्राप्त करनी है तो प्रतिदिन उन्हें अनुलोम विलोम प्राणायाम करना चाहिए। इस प्राणायाम से हमारी पिंगला नाड़ी सक्रिय होती है।

अंडरपास में जमे पानी को लेकर जाटू लोहारी में अनिश्चिकालीन धरना शुरू

रेलवे अंडरपास, समस्या बनी खास खेतों में पहुंचने की टूट चुकी आस

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

लगता है कि रेलवे अंडरपास रेलवे के लिए ही नहीं, आमजन के लिए भी परेशानी का कारण बनते जा रहे है। भूमिगत पानी (चौव्वा) उपर आने की वजह से अंडरपास जमीनी पानी से लबालब है। वह पानी न तो कम हो रहा है न ही सूख रहा। यह हालात गांव जाटू लोहारी की फाटक संख्या सी-60 व 62 की बनी है। इन दोनों अंडरपासों में करीब चार से पांच फुट तक पानी जमा है। इस पानी से न तो बैलगाड़ी निकल पा रही है और न ही ट्रैक्टर। जिस वजह से लोगों का खेतों में आना जाना पूरी तरह से बंद हो गया है। लोग जान जोखिम में डालकर पैदल ही रेलवे लाइन को पार करके अपने खेतों तक पहुंच रहे है। उक्त गांव के लोगों ने आज इसी समस्या को लेकर अनिश्चिकालीन धरना शुरू कर दिया है। ग्रामीणों ने चेतावनी दी है कि जब तक उनकी इस समस्या का समाधान नहीं हो जाता। तब तक वे इसी जगह धरने पर बैठे रहेंगे। ग्रामीण राजेंद्र कुमार ने बताया कि अंडरपास में पानी होने की वजह से न तो वे खेतों में बैलगाड़ी ला सकते और न ही ट्रैक्टर। जिस वजह से उनका खेतों में आना जाना पूरी तरह से बंद हो गया है। इस बारे में कई बार रेलवे अधिकारियों से शिकायत की गई,लेकिन आज तक कोई भी समाधान नहीं हो पाया है।

उक्त इलाके में करीब 2000 एकड़ भूमि है। जिसका रास्ता इसी अंडरपास से जाता है

भिवानी। ओपन फाटक की मांग को लेकर धरने पर बैठे ग्रामीण व अंडर पास में जमा पानी से जेसीबी पर बैठकर गुजरते ग्रामीण। फोटो: हरिभूमि

15 साल से बनी है समस्या

ग्रामीणों ने बताया कि जब से ओपन फाटक को बंद करके उसकी जगह अंडर पास बनाया गया है। उसी दिन भूमिगत पानी अंडरपास में जमा होने की समस्या बनी हुई है। 15 साल से तो यह समस्या और भी विकराल हो गई है। भूमि गत पानी का स्तर उपर आने की वजह से अंडरपास में करीब चार से पांच फुट तक पानी जमा है। अंडरपास में बनाई गई दिवारें गिर चुकी है। उनमें से पानी टपक रहा है। ऐसे में कभी भी बड़ा हादसा हो सकता है। ग्रामीणों ने बताया कि अगर यही समस्या रही तो वे अपने खेतों को बेचने पर मजबूर होंगे। उक्त इलाके में करीब 2000 एकड़ भूमि है। जिसका रास्ता इसी अंडरपास से होकर निकलता है।

4 गांवों को जोड़ता है यह अंडपास

दोनों अंडरपास का रास्ता 4 गांवों को जोड़ता है। जहां से रोजाना सैकड़ों राहगीरों का आवागमन होता है, लेकिन पिछले 4-5 माह से यहां 4-4 फ्रीट पानी जमा होने के कारण काफी समस्याओं का सामना किसानों व ग्रामीणों को करना पड़ता है। यहां से ट्रेक्टर ट्रॉली या मशीनें किसान निकाल भी लें तो जंग खाने लगती हैं। बैरिंग हर रोज जाम हो जाते हैं। जिसके चलते गांव से दूसरी तरफ किसानों का आना जाना बंद हो चुका है। वो ना हरा चारा ला पाते और ना अब सरसों का कटाई कर पा रहे। किसान जयपाल,कृष्ण शर्मा ने बताया कि वे डीसी से लेकर विधायक तक से मिल चुके हैं। पर हर जगह समाधान की जगह मिठी गोली ही मिली। जिससे परेशान होकर अब वो इस अंडर पास पर अनिश्चितकालीन धरने पर बैठे हैं। थोड़े दिनों में समाधान ना होने पर किसानों ने भूख हड़ताल की चेतावनी दी है। साथ ही कहा कि कोई अनहोनी हुई तो जिम्मेदारी सरकार या रेलवे विभाग की होगी।

भिवानी। कार्यक्रम में मुख्यअतिथि को सम्मानित करते हुए। फोटो: हरिभूमि

मातृ भाषा से होती है गौरव की अनुभूति : डॉ जितेंद्र

- सीबीएलयू के भारतीय संस्कृति एवं भाषा विभाग ने अंतर राष्ट्रीय मातृ भाषा दिवस मनाया

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

चौधरी बंसी लाल विश्वविद्यालय के भारतीय संस्कृति एवं भाषा विभाग द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मातृ भाषा दिवस पर मातृ भाषा हमारा स्वाभिमान कार्यक्रम का आयोजन विश्विद्यालय की कुलगुरु प्रो दीप्ति धर्माणी के मार्गदर्शन में किया गया। कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ जितेंद्र भारद्वाज की गरिमामय उपस्थिति में बतौर विशिष्ट वक्ता पूर्व प्राचार्य डॉ बुद्धदेव आर्य ने शिरकत की। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा मां सरस्वती की प्रतिमा के सामने द्वीप प्रज्वलित कर किया गया।

कुलसचिव डॉ जितेंद्र कुमार भारद्वाज ने संबोधित करते हुए कहा कि मातृ भाषा दिवस कार्यक्रम में शामिल होना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। जन्म के बाद बच्चा मां से सीखता है। मातृ भाषा मां की भाषा है। हम सपने केवल अपनी मातृ भाषा में ही देख सकते हैं और उन्हें साकार कर सकते हैं। मातृ भाषा से गौरव की अनुभूति होती है। उन्होंने मातृ भाषा के अधिक से अधिक प्रचार प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का आह्वान किया। विभागाध्यक्ष डॉ जितेंद्र कुमार ने सभी अतिथियों का स्वागत एवं अभिनन्दन करते हुए कहा कि मातृ भाषा में मातृ शब्द भावनात्मक जुड़ाव का प्रतीक है। प्रोफेसर हुकमचंद ने कहा कि संस्कृत,हिंदी भाषा और संगीत एक दूसरे के पूरक हैं। डॉ स्नेहलता ने कहा कि हम अपनी मातृ भाषा में अधिक से अधिक अभिव्यक्ति करें। हरियाणा पब्लिक सर्विस कमीशन के माध्यम से कालेज में हिंदी विषय में चयनित हिंदी विभाग के पूर्व छात्र देवेंद्र व ज्योति शर्मा को सम्मानित किया गया।

सर्वाधिक विकास

बतौर विशिष्ट अतिथि पूर्व प्राचार्य डॉ बुद्धदेव आर्य ने कहा कि महत्व भाषा का नहीं बल्कि मातृ का है। मां की गोद में बच्चे को कोई दुख नहीं हो सकता। वैज्ञानिक भी मानते हैं कि मातृ भाषा में ही सर्वाधिक विकास होता है। उन्होंने बताया कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मातृ भाषा पर विशेष बल दिया गया है। उन्होंने कहा कि मातृ भाषा केवल शब्दों का समूह नहीं है यह पीढ़ियों के अनुभव का समावेश है। मातृ भाषा आत्म ज्ञान का मूल आधार है।

दौड़ में योगी और वैशाली प्रथम

- प्राचार्या ने हटकर चलाई मुहिम

हरिभूमि न्यूज ⏭बवानीखेड़ा

बवानीखेड़ा के वीर शहीद कपिल देव राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में प्राथमिक विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए खेल प्रतियोगिता का आयोजन करवाया गया। ये आयोजन सीआरसी संतोष भाकर द्वारा कलस्टर के सभी प्राथमिक पाठशाल में पढ़ने वाले बालवाटिका से पांचवीं कक्षा के बच्चों के लिए करवाया गया जिसमें 7 विद्यालय के अनेक विद्यार्थियों ने शिक्षकों के नेतृत्व में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। प्रतियोगिता में बालवाटिका से दूसरी व तीसरी से 5वीं तक दो ग्रुप बनाए गए। बालवाटिका से दूसरी कक्षा में रेस प्रतियोगिता में योगी व वैशाली प्रथम, वीर व अवनी द्वितीय, भावेश व निधि तृतीय रहे।

बवानीखेड़ा। विजेता विद्यार्थियों के साथ प्राचार्या व स्टाफ। फोटो: हरिभूमि

तीसरी से पांचवी में शिवम ने मारी बाजी

रेस में तीसरी से पांचवी में शिवम व प्रतिभा प्रथम, नवाब व राखी, आरोही द्वितीय, अर्श व श्योनवी तृतीय रहे। बालवाटिका से दूसरी कक्षा में वन लेग में देवांश व यशिका प्रथम, वीर व वैशाली द्वितीय, मोहित व अवनी तृतीय रहे वहीं वन लेग में तीसरी से पांचवी में हार्दिक व तनू प्रथम, नसीब व पूर्वी द्वितीय रहे।

बिना पक्ष जाने पीआईडी रद्द करने वाले अफसर नपेंगे

- विधायक कपूर वाल्मीकि ने सीएम से की मुलाकात, पांच अधिकारियों की कमेटी गठित

हरिभूमि न्यूज ⏭बवानीखेड़ा

बवानीखेड़ा कस्बे के लोगों के लिए राहत भरी खबर। कस्बे में 272 पीआईडी की सुलगी आग अब शांत होने लगी है। इसी मसले को लेकर विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि ने सीएम से मुलाकात की और इस मामले की जांच कराए जाने तथा पीड़ितों के साथ अन्याय न होने देने की गुहार लगाई।

इस पर सीएम ने किसी भी पीड़ित के साथ अन्याय न होने देने का भरोसा दिलाया। साथ ही विधायक की गुजारिश पर कहा कि जिस अधिकारी ने बिना पीड़ितों का पक्ष जाने ही पीआईडी रद्द कर दी तो उन अधिकारियों से भी जवाब तलबी की जाएगी। सीएम के आश्वासन के बाद कस्बे के लोगों में खुशी का माहौल है और वे सीएम के साथ विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि का आभार जता रहे है।

56 बरस पहले यह जमीन थी पंचायत की: पीआईडी रद्द करने के बाद लोगों की शिकायत के बाद राजस्व रिकार्ड खंगाला गया। तो वर्ष 1970 में यह जमीन बवानीखेड़ा पंचायत की मिली। बाद में यह जमीन नगरपालिका बवानीखेड़ा.के नाम चढ गई। लोगों का कहना है कि बाद में किस तरह से यह जमीन नगरपालिका के खाते से उतरकर वक्फ बोर्ड के नाम चढ़ गई। फिलहाल यह जांच का विषय है। विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि ने बताया कि उन्होंने इसी मामले को लेकर सीएम से मुलाकात की और इस मामले की तहकीकात करवाए जाने की मांग की।

बवानीखेड़ा। विधायक की सीएम से मुलाकात होने व सकारात्मक भरोसा दिलाने की चर्चा करते कस्बे के लोग। फोटो: हरिभूमि

सौंपा था मांगपत्र

विगत में बवानीखेड़ा कस्बे में नगरपालिका ने 272 पीआईडी को वक्फ बोर्ड की जमीन बताकर रद्द कर दिया था। जिसके बाद बवानीखेड़ा के लोगों की सांसे फूल गई और उन्होंने विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि व चेयरमैन सुंदर अत्री को मांगपत्र सौंपकर उनकी रद्द पीआईडी को बहाल कराए जाने मांग की थी।

गांव बुशान में आयोजित होगी जागरण कुश्ती दगंल और खेल प्रतियोगिता

तोशाम। गांव बुशान में बाबा बीरबल नाथ की याद में महंत पूर्ण नाथ व महंत छोटू नाथ के पावन सानिध्य में फाल्गुन नवमी 25 फरवरी को मेला, विशाल कुश्ती दंगल व ऐथलेटिक्स प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रमुख समाजसेवी कैप्टन जयसिंह कालीरामण व अति विशिष्ट अतिथि मोनू दहिया मुख्य रूप से शिरकत करेगें। महंत पूर्ण नाथ महाराज व सरपंच मेहर चंद ने बताया कि 24 फरवरी रात्रि को जागरण में आमनत्रित कलाकार विधि देशवाल रोहतक, श्री श्याम अलख मंडल बहल व चरण सिंह संडवा बाबा के भजनों द्वारा बाबा का गुणगान करेंगे। 24 फरवरी को स्मेसिंग वॉलीबॉल प्रतियोगिता होगी जिसमें पहला इनाम 31000, दूसरा इनाम 21000 व तीसरा इनाम 11000 रुपये रहेगा। 25 फरवरी को केवल लड़को के कुश्ती दंगल में पहला इनाम 21000 दूसरा 11000, तीसरा 7100, चौथा 5100, पांचवा 3100, छठा 2100, सातवाँ 1100 रुपये व आठवां 500 रुपये इनाम रहेगा।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन नं. : 8814999151, 9253681005

जिलेभर में आज होंगे हिंदू सम्मेलन

भिवानी। सर्वसमाज की तरफ से जिले में अलग-अलग स्थानों पर हिंदू सम्मेलन आयोजित किए जा रहे है, जिसमें संत समाज का मार्गदर्शन रहेगा। लोहारू खंड के गांव सोहांसड़ा के रामलीला मैदान में रविवार सुबह सवा नौ बजे हिंदू सम्मेलन होगा। वहीं तोशाम के सनातन धर्म मंदिर में सुबह सवा नौ बजे, शहर में बाबा लोहड़ पीर मंदिर के पीछे वाले पार्क में सुबह 10 बजे, बीटीएम चौक स्थित श्रीखाटू श्याम मंदिर में सुबह साढ़े 10 बजे, विकास नगर के बड़ा पार्क में सुबह सवा 10 बजे, गांव चांग के सैय मोड़ पर प्रेम रिसोर्ट में सुबह साढ़े 10 बजे हिंदू सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर संत लोग पहुंकचर संबोधित करेंगे और भंडारे का आयोजन भी होगा।

पारस ने 99.69 पर्सेंटाइल प्राप्त की

- जेईई परीक्षा के अचीवर्स छात्रों को किया सम्मानित

हरिभूमि न्यूज ⏭बवानीखेड़ा

मिलकपुर स्थित आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस में जेईई परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों के सम्मान में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रबंधन से मुख्य अतिथि के रूप में मास्टर राजेंद्र यादव तथा चेयरमैन आनंद यादव उपस्थित रहे। सफल विद्यार्थियों के अभिभावकों को प्राउड पेरेंट्स सम्मान से सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि मास्टर राजेंद्र यादव ने कहा कि यह सफलता विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत, शिक्षकों के समर्पण और अभिभावकों के सहयोग का परिणाम है।

बवानीखेड़ा। विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए। फोटो: हरिभूमि

8 से 10 घंटे किया अध्ययन

उन्होंने विद्यार्थियों को भविष्य में भी इसी लगन और अनुशासन के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। वहीं चेयरमैन आनंद यादव ने बताया कि सभी विद्यार्थियों ने बिना किसी कोचिंग के केवल सीबीएसई की पुस्तकों के माध्यम से यह मुकाम हासिल किया है। उन्होंने कहा कि छात्रों ने प्रतिदिन 8 से 10 घंटे तक नियमित अध्ययन किया, मोबाइल फोन से दूरी बनाए रखी और विषयों को शिक्षकों के साथ गहन चर्चा कर समझा, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें यह सफलता प्राप्त हुई। प्रधानाचार्य नितीश मिश्र ने बताया कि छात्र पारस ने 99.69 पर्सेंटाइल, ईशांत ने 98.50 पर्सेंटाइल तथा करण ने 98.27 पर्सेंटाइल प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया।

प्रथम रैंक प्राप्त करने वाली आशी को किया सम्मानित

हरिभूमि न्यूज ⏭चरखी दादरी

जेईई मैन में महिला वर्ग में ऑल इंडिया प्रथम रैंक प्राप्त कर क्षेत्र का नाम रोशन करने वाली प्रतिभाशाली छात्रा आशी ग्रेवाल के सम्मान में गांव फौगाट-सांजरवास में भव्य समारोह का आयोजन किया।

कार्यक्रम फौगाट-सांजरवास स्थित एसएम स्कूल परिसर में उत्साह और गर्व के वातावरण में संपन्न हुआ। समारोह के दौरान सरपंच विनोद ने बुक्के भेंट कर आशी का स्वागत किया। स्कूल संचालक मोनिका एवं सरिता ने माल्यार्पण कर उनका अभिनंदन किया। प्राचार्य सतीश व भूपसिंह परमार ने स्मृति-चिन्ह भेंट कर आशी का उत्साहवर्धन किया। चंद्रपाल सेना मेडल ने 1100 रुपये की सम्मान राशि प्रदान की। वहीं कृष्ण फरमाना एवं बेदपाल ने सम्मान स्वरूप भेंट अर्पित की। इस अवसर पर आशी के परिवारजन ओमप्रकाश, निर्मला, सोमबीर, अशोक, रेखा सहित अन्य सदस्यों को भी विशेष रूप से सम्मानित किया।

आशी को सम्मानित करते अतिथि।

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
भिवानी : हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन : 8814999170, दादरी : 9253681008

संघ ने 58 साल सेवा सुरक्षा एक्ट-2024 को लागू करवाने की उठाई मांग

कंप्यूटर प्रोफेशनल संघ ने विधायक सर्राफ को सौंपा ज्ञापन

डिस्टिक इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी सोसाइटी को भी एक्ट में शामिल करने की मांग

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

कंप्यूटर प्रोफेशनल संघ (डीआईटीएस) के कर्मचारियों ने शनिवार को (58 साल) सेवा सुरक्षा एक्ट-2024 को लागू करवाने को लेकर विधायक घनश्याम सर्राफ को ज्ञापन सौंपा है।

इस दौरान जिला भिवानी में डिस्टिक इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी सोसाइटी के माध्यम से उपायुक्त कार्यालय, एसडीएम, राज्यस्व विभाग के क्षेत्रीय कार्यालय तहसील,उप तहसील व सरल केंद्रों के अंतर्गत विभिन्न पदों पर पिछले 18-25 वर्षों से पूरी निष्ठा व ईमानदारी के साथ कार्यरत हैं। सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं एवं आईटी सेवाओं को जमीनी स्तर पर लागू करने की महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहें है। प्रदेश सरकार द्वारा अनुबंध आधार पर कार्यरत कर्मचारियों की सेवा सुरक्षा एक्ट-2024 की घोषणा की है, जिसमें सभी को 58 वर्ष तक सेवा सुरक्षा के साथ-साथ अन्य लाभ भी मिलेंगे, लेकिन सरकार द्वारा डिस्टिक इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी सोसाइटी को शामिल नहीं किया।

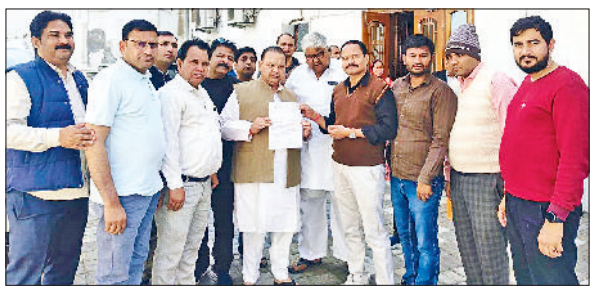

भिवानी। विधायक सर्राफ को ज्ञापन सौंपते कंप्यूटर प्रोफेशनल संघ के सदस्य।

5 से 6 माह से नहीं मिल रहा वेतन

कई एचकेआरएनएल के कर्मचारियों की लगभग 5 से 6 माह से वेतन भी मिल रहा है। इन कर्मचारियों का बकाया वेतन दिलवाया जाए। इस बारे कर्मचारियों ने सेवा सुरक्षा एक्ट-2024 के तहत विधायक घनश्याम दास सर्राफ से एक्ट को लागू करवाने की मांग की। विधायक घनश्याम सर्राफ को ज्ञापन सौंपने वालों में राज्य प्रधान हवासिंह, प्रधान अनिल कुमार, महामंत्री गुरदीप राठी, अरुण सोनी, रवि गोयल, ललित, नरेंद्र, मनोज ढाणा, विनोद व हरीश आदि शामिल रहे।

कंप्यूटर सेंटर को मिला जिले में सर्वाधिक दाखिले का अवॉर्ड

भिवानी। हरियाणा नॉलेज कॉरपोरेशन लिमिटेड द्वारा आयोजित वर्ष 2026 के वार्षिक अवॉर्ड फंक्शन में भिवानी के फैंसी चौक स्थित एजुकेट एचकेसीएल कंप्यूटर सेंटर को कंप्यूटर के क्षेत्र में भिवानी जिले में सर्वाधिक छात्र नामांकन (अधिकतम दाखिले) करने व कंप्यूटर शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए पर विशेष सम्मान से नवाजा गया। इस अवॉर्ड समारोह में अनेक कंप्यूटर प्रशिक्षण केंद्रों ने भाग लिया, जिनमें एजुकेट एचकेसीएल कंप्यूटर सेंटर ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए यह उपलब्धि हासिल की। यह पुरस्कार संस्थान की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, अनुशासित कार्यप्रणाली तथा अनुभवी शिक्षकों की मेहनत का परिणाम है।

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 22 फरवरी 2026

कुछ साल पहले तक वर्क फ्रॉम होम के बारे में कम ही लोग जानते थे। लेकिन आज कंडीशन इससे भी एक कदम आगे बढ़कर वर्क फ्रॉम एनीवेयर तक पहुंच चुकी है। कई सर्विस सेक्टर्स ऐसे हैं, जिसमें यह वर्क मोड खूब पॉपुलर हो चुका है। इस मोड के अनेक फायदे हैं तो कुछ कमियां भी हैं। इन सबके बारे में आप जरूर जानना चाहेंगे।

कहीं से भी काम करने की आजादी

वर्क फ्रॉम एनीवेयर

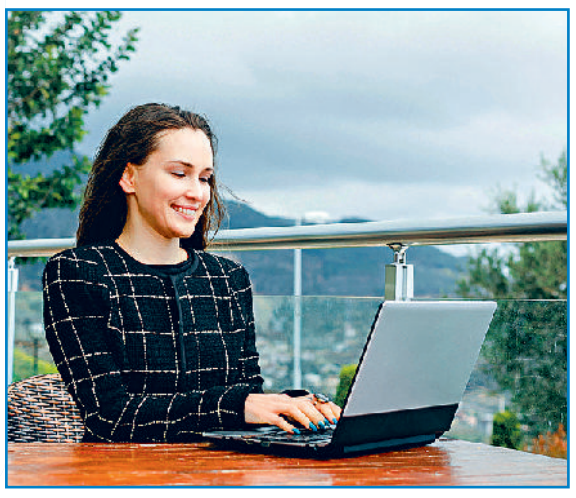

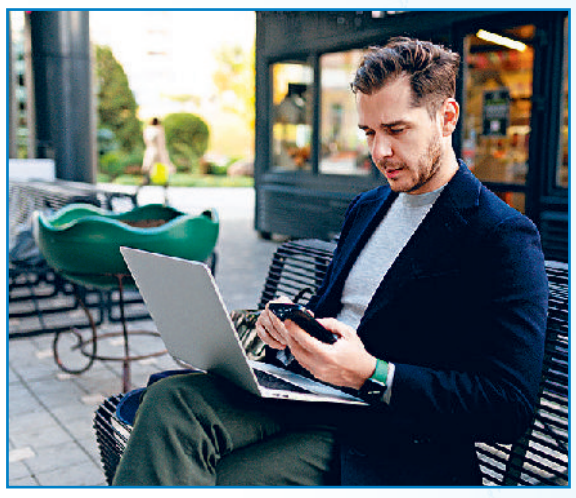

{ कवर स्टोरी / कीर्तिशेखर }

करीब पांच वर्ष पहले कोरोना महामारी ने कार्यशैली में जिस बदलाव को मजबूरी में शुरू कराया था, वह अब स्थायी जीवनशैली का विकल्प बनता जा रहा हैं। पहले सवाल था- क्या घर से काम करना संभव है? अब सवाल बदल चुका है- क्यों न कहीं से भी काम किया जाए? इसी सवाल से जन्म होता है, वर्क फ्रॉम एनीवेयर की अवधारणा का यानी, ऐसा काम जिसे करने के लिए न तो ऑफिस की दीवारें जरूरी हैं, न किसी तय शहर की सीमा, बस आपका अपना लैपटॉप हो, इंटरनेट कनेक्शन हो और थोड़ी-सी मानसिक एकाग्रता, इसके बाद कहीं पर भी आप अपना ऑफिस वर्क शुरू कर सकते हैं।

ऐसे बदलती गई कार्यशैली: वर्क फ्रॉम होम ने लोगों को यह सिखाया कि जरूरी नहीं कि हर काम मीटिंग रूम या ऑफिस डेस्क पर ही बैठकर किया जाए। इस अवधारणा ने यह भी बताया कि प्रोडक्टिविटी का मतलब केवल कुर्सी पर बैठना नहीं होता। आउटपुट ज्यादा मायने रखता है। इसके बाद लोगों ने महसूस किया कि अगर घर से काम करना संभव है, तो फिर इंटरनेट की बदौलत कहीं से भी काम करना संभव है। कोरोना और उसके बाद से ही लोगों ने घूमने गए हिल स्टेशनों, समुद्र किनारे या शहर से अपने गांव जाकर घर के एक कोने में बैठकर देश-विदेश की मल्टीनेशनल कंपनियों का काम करने लगे। यहीं से वर्क फ्रॉम एनीवेयर का कॉन्सेप्ट व्यवहार में उतरा।

इसलिए चुन रहे यह तरीका: वर्क फ्रॉम एनीवेयर का कॉन्सेप्ट पॉपुलर होने की कई वजहें हैं। महानगरों में भीड़ बहुत बढ़ती जा रही है। भारी-भरकम किराए के बाद ही किराए का मकान मिलता है, बल्कि वहां जिंदगी भी बहुत मुश्किल भरी हो जाती है। ऑफिस आने-जाने में रोज ट्रैफिक जाम से पाला पड़ता है। परिवार साथ न होने की वजह से खाने की समस्या होती है। घर और परिवार से दूर रहने के कारण हर समय मानसिक अशांति रहती है। इस तरह काम तो होता है, पर जीवन बेचैन रहता है। इसलिए युवाओं का कहना है कि अब वो जीवन के लिए काम करना चाहते हैं, काम के लिए जीवन की हायतौबा नहीं झेलना चाहते। नतीजा यह है कि नई पीढ़ी के बहुत से लोग वर्क फ्रॉम एनीवेयर का विकल्प बड़ी सहजता से चुन रहे हैं, क्योंकि यह विकल्प उन्हें भरपूर आजादी का एहसास कराता है।

इस कॉन्सेप्ट का मेन टार्गेट: वर्क फ्रॉम एनीवेयर के बारे में इस बात को समझना जरूरी है कि इसका मतलब डिजिटल घुमक्कड़ी नहीं है, न ही इसका मतलब है कि कहीं भी घूमते-फिरते रहें और जब मौका मिले या मन करे तो काम कर लें। अगर इस धारणा का मतलब यह हो जाएगा, तब तो काम करना प्राथमिकता नहीं रह जाएगी। प्रोफेशनल्स के लिए उनका वर्क बहुत मायने रखता है। ऐसे में इंटरनेट ने बौद्धिक काम करने वाले लोगों को यह सुविधा तो दी ही है कि अगर हिल स्टेशन पर घूमने जाएं, तो समय निकालकर वहां से भी अपना काम कर सकें। मां-बाप के पास गांव जाएं तो वहां भी साथ अपना काम लेकर जाएं और कहीं किसी जरूरी यात्रा पर निकल रहे हों तो भी अपना काम अपने साथ रख सकते हैं।

इन फील्ड्स में है सफल यह मॉडल: वर्क फ्रॉम एनीवेयर का कॉन्सेप्ट सर्विस सेक्टर में ही संभव है कि आप कहीं से भी अपनी विशेषज्ञता संबंधी सेवाएं अपने नियोक्ता को दे सकें। हर काम वर्क फ्रॉम एनीवेयर के ढांचे में फिट नहीं होता है। बहरहाल, जो काम इस मोड में सही से किए जा सकते हैं, वो क्षेत्र हैं- आईटी और सॉफ्टवेयर, डिजिटल मार्केटिंग, एडिटिंग, कंटेंट राइटिंग, डिजाइनिंग, ऑनलाइन टीचिंग, कस्टमर सपोर्ट-कंसल्टेंसी, एचआर असिस्टेंस और फाइनेंस एनालिसिस भी इस वर्क पैटर्न से संभव है। दूसरे शब्दों में जिन कामों में फिजिकल उपस्थिति या मशीनरी की मौजूदगी की जरूरत नहीं होती, उन क्षेत्रों में यह मॉडल तेजी से अपनाया जा रहा है।

एंप्लॉई-एंप्लॉयर दोनों खुश: कंपनियां इसलिए इस मॉडल को स्वीकार कर रही हैं, क्योंकि इससे उनको भी फायदा है। इससे उन्हें ऑफिस स्पेस पर खर्च नहीं करना पड़ता। ऑफिस चलाने के लिए जो एस्टेब्लिशमेंट खर्च होते हैं, उनसे भी बचाव हो जाता है और सबसे बड़ी बात तो यह है कि लोगों को भर्ती करने के लिए पूरी दुनिया का दायरा मिल जाता है। कर्मचारी भी इससे संतुष्ट रहते हैं, क्योंकि हर रोज घर से काम करने के लिए नहीं निकलना पड़ता और न ही यात्रा करने की जो परेशानियां और तनाव होती हैं, उनसे निपटना पड़ता है।

कंपनियां भी अब इस बात को समझ चुकी हैं कि अगर सहूलियतों के बीच कर्मचारी को काम करने का मौका मिलता है तो उसका परफॉर्मेंस बेहतर होता है। इसलिए वे ऐसे कर्मचारियों को रखना पसंद करती हैं। इससे कर्मचारियों को सबसे बड़ा फायदा यह होता है कि उनके रहने और दूसरी जगह पर जाकर खाने-पीने की जो भारी भरकम लागत आती है, उससे छुटकारा मिल जाता है। घर से ऑफिस तक जाने में जो समय लगता है, उससे भी मुक्ति मिल जाती है। यह बचा हुआ समय व्यक्तिगत रुचियों का आनंद लेने और आराम करने के लिए इस्तेमाल होता है। कह सकते हैं इस अवधारणा से काम कराने वाला भी खुश होता है और काम करने वाला भी खुश और दोनों को फायदा होता है।

प्रोफेशनल्स का बचता है टाइम: काम की इस अवधारणा का एक फायदा यह है कि लोग दिन में ऑफिस का काम करते हैं और फिर जो उनका दफ्तर तक जाने और आने का समय बचता है। उस समय का उपयोग बागवानी करने, संगीत सीखने, लेखन करने या अपने किसी शौक को पूरा करने के लिए लगाते हैं।

मौजूद हैं कुछ चुनौतियां: इस वर्क मोड में सबसे पहली चुनौती तो यह है कि ये काम वहीं हो सकता है, जहां इंटरनेट की सुविधा अच्छी हो, बिजली की आपूर्ति चौबीसों घंटे हो और काम करने के लिए एक सुरक्षित और एकांत जगह हो। साथ ही वहां दफ्तर जैसा माहौल बनाने की सुविधा हो। इसके अलावा सेल्फ डिसिप्लीन भी जरूरी होता है। कुछ लोग जब खुद निर्णय लेना होता है, तो कंसंट्रेट होकर काम नहीं करते। ऐसे काम करने के तरीके से कई प्रोफेशनल्स का निजी जीवन डिस्टर्ब हो जाता है। वे ऑफिस वर्क में बहुत समय देने लगते हैं। इसलिए बहुत सारे लोग शुरू-शुरू में यह फॉर्मूला अपनाते हैं, लेकिन जल्द ही ऊब कर ऑफिस आने लगते हैं। क्योंकि घर में काम करते हुए उनके वर्किंग ऑवर बहुत बढ़ जाते हैं। वर्क फ्रॉम एनीवेयर करते समय भले तनाव कम होता हो, आजादी खूब महसूस होती हो, लेकिन सामाजिक संपर्क से कट जाते हैं और अकेलेपन की आशंका से घिर जाते हैं। इसलिए कई बार कहीं से भी काम करने की सुविधा का नुकसान मानसिक रूप से बीमार होने के रूप में सामने आता है। इसलिए लोग अब हाइब्रिड मॉडल को बेहतर मान रहे हैं यानी चार दिन घर में और दो दिन दफ्तर में काम करना, सही संतुलन है। हां, महिलाओं को जरूर काम करने की इस शैली का फायदा मिलता है, क्योंकि इसके चलते उन्हें होम मेकिंग और करियर में संतुलन बनाने में मदद मिलती है। *

वर्क फ्रॉम एनीवेयर के लिए जरूरी सुविधाएं

- घर में तेज रफ्तार इंटरनेट कनेक्शन होना जरूरी है।
- घर में लैपटॉप के साथ बैकअप पावर की सुविधा होना जरूरी है।
- घर में काम करने के लिए ऑफिस जैसे स्थान का होना जरूरी है।
- रोज सुबह अनुशासित ढंग से तैयार होकर दफ्तर की तरह काम करना जरूरी है।
- घर से काम करते समय कंप्यूटर और साइबर सिक्योरिटी का ज्ञान भी जरूरी है। अगर कंप्यूटर की बेसिक समझ नहीं है तो कभी-भी अगर लैपटॉप या वर्क स्टेशन में कोई समस्या आ गई, तो तब तक काम नहीं कर पाएंगे, जब तक घर कोई मैकेनिक आकर समस्या हल न करे।
- घर से काम करने के लिए लगातार तकनीक में भी माहिर होते रहना जरूरी है।
- घर से काम करते समय लगातार उत्साह बनाए रखना भी जरूरी है ताकि अपना नियमित रूटीन सही से पूरा कर सकें।

आज के दौर में जीवन को सुविधाजनक बनाने वाला मोबाइल बेशुमार लोगों को अपना लती भी बना रहा है। इसके दुष्प्रभावों से बचने के लिए अब लोग तरह-तरह के उपाय आजमा रहे हैं। इनके बारे में आप भी जानिए।

मोबाइल एडिक्शन से बचने के लिए

आजमाए जा रहे तरह-तरह के उपाय

{ टेक्नोलाइफ / लोकमित्र गौतम }

हर सुबह आंख खुलते ही मोबाइल। रात में सोते समय आखिरी नजर तक मोबाइल। दिन में बीच-बीच में सैकड़ों बार स्क्रीन चेक करना। अब ये किसी व्यक्ति विशेष की आदत नहीं बल्कि ज्यादातर लोगों की लाइफस्टाइल बन गई है। अब मोबाइल में नोटिफिकेशन देखना याद नहीं रखना पड़ता। लोगों की यह स्वतः आदत बन गई है। लेकिन इसी दौर में कुछ और भी दिलचस्प और विरोधाभासी बातें भी हो रही हैं। एक ट्रेंड बहुत तेजी से उभर रहा है और यह है मोबाइल से दूरी बनाने का। नहीं, लोग तकनीक छोड़ नहीं रहे बल्कि उसके साथ नई-नई शर्तों के तहत रिश्ता तय कर रहे हैं। कोई नोटिफिकेशन बंद कर रहा है, कोई फोन ग्रे स्केल पर डाल रहा है, कोई डंब फोन खरीद रहा है, तो कोई रविवार को मोबाइल अलमारी में बंद करके उसमें ताला लगा देता है। मोबाइल को लेकर उसके पक्ष और उसके विरोध में एक से बढ़कर एक आदतें दुनिया का ध्यान खींच रही हैं।

क्यों छोड़ना चाहते हैं फोन: हाल के कुछ सालों में ऐसे कई अनुभव सामने आए हैं, जिससे पता चलता है कि मोबाइल लोगों का ध्यान बहुत जल्दी भटका देता है। यह भी महसूस किया गया है कि लगातार मोबाइल का इस्तेमाल करने से अधूरेपन का एहसास बढ़ जाता है। मोबाइल की लत लग जाए, तो कब देखते ही देखते टाइम फुर्र हो जाता है, पता ही नहीं चलता। इन सबके अलावा हाल के सालों में बिना कुछ किए लोगों को एक ऐसी थकान जकड़ रही है, जो जानकारों के मुताबिक मोबाइल की देन है। ऐसे ही और भी अनेक कारण हैं, जिसके चलते अब लोग मोबाइल से अगर पूरी तरह से नहीं, तो बीच-बीच में कुछ समय तक के लिए पिंड छुड़ाना चाहते हैं। इसलिए इन दिनों लोग मोबाइल से दूर रहने के लिए तरह-तरह के उपाय आजमा रहे हैं। इनमें से कुछ के बारे में बता रहे हैं।

नोटिफिकेशन मिनिमलिज्म: बहुत से लोग अब सिर्फ कॉल और जरूरी एप्स के नोटिफिकेशन ही चालू रखते हैं। व्हाट्सएप ग्रुप, सोशल मीडिया लाइक और ई-मेल अलर्ट, सब कुछ लोग बंद कर रहे हैं। इस कारण फोन हाथ में लेने की अपने आप जरूरत कम रह जाती है। ऐसे उपाय अपनाने वाले लोग बताते हैं- जहां वह पहले 125 से 150 बार तक स्क्रीन अनलॉक करते थे, वहीं ऊपर बताए गए उपाय यानी नोटिफिकेशन मिनिमलिज्म के बाद अब ये संख्या घटकर 40 से 50 बार रह गई है।

ग्रे स्केल मोड: इसका मतलब है फोन की रंगीन स्क्रीन को ब्लैक एंड व्हाइट में बदल देना। फोन की दुनिया काली-सफेद होते ही लोगों का रील्स में आकर्षण घट जाता है और स्क्रॉल करने का मन ही नहीं रह जाता। यह एक छोटा-सा उपाय है, लेकिन इसके बेहद असरदार मनोवैज्ञानिक नतीजे हासिल होते हैं। इसके साथ ही कुछ लोग अपने फोन में डाउनलोड किए गए हर मीडिया एप के लिए दिन में 20 से 30 मिनट की लिमिट तय कर देते हैं और लिमिट खत्म होते ही यह एप अपने आप ही लॉक हो जाते हैं, जिससे इनसे मुक्ति मिल जाती है। ये उपाय शुरू में तो झुंझुलाहट पैदा करता है, मगर 3-4 दिन के बाद इसकी आदत बन जाती है।

फोन मुक्त दिन की शुरुआत: कुछ लोग इन दिनों सुबह जगने के बाद एक से दो घंटा तक बिल्कुल मोबाइल के पास नहीं जाते, इस दौरान उनका मोबाइल स्विच ऑफ रहता है। जब तक मोबाइल स्विच ऑफ रहता है, वे फ्रेश होते हैं, चाय पीते हैं, अखबार पढ़ते हैं, एक्सरसाइज का अपना रुटीन खत्म करते हैं या ऐसा कुछ नहीं भी करते हैं तो इस दौरान सिर्फ खिड़की या बालकनी से बाहर झांकते हैं। जो लोग ये उपाय आजमा रहे हैं, उनका अनुभव बताता है कि इससे पूरा दिन शांति महसूस होती है।

सोशल मीडिया फास्टिंग: कुछ लोग सोशल मीडिया फास्टिंग का उपाय भी आजमा रहे हैं। फोन से दूर रहने का यह एक और उपाय है। इसके चलते जैसे कुछ लोग धार्मिक रूप से हफ्ते में किसी एक या दो दिन उपवास रखते हैं। लगभग उसी तरह इस प्रयोग के तहत लोग हफ्ते में एक दिन या 15 दिन में एक दिन फोन से पूरी तरह से दूर रहने का उपाय आजमाते हैं।

बेडरूम से बाहर फोन: कुछ लोग अपने फोन को बेडरूम से बाहर रखकर सोते हैं। इस तरह फोन को बेडरूम से बाहर रखने के बहुत फायदे मिलते हैं। इससे नींद बेहतर आने लगती है। रात की स्क्रॉलिंग खत्म हो जाती है। *

मानसिक स्वास्थ्य के लिए है जरूरी

लोग इस बात को भली-भांति समझने लगे हैं कि फोन के बहुत ज्यादा इस्तेमाल के कारण उनकी आंखों पर ही नहीं, ध्यान लगाने की क्षमता पर, भावनात्मक स्थिरता पर और यहां तक कि आत्मसंतोष की अनुभूति पर भी जबर्दस्त असर पड़ने लगा है। मोबाइल से दूर रहना एक तरह से खुद के पास होने जैसा है। क्योंकि जो लोग बहुत ज्यादा फोन इस्तेमाल करते हैं, उन लोगों के अनुभव बताते हैं कि वो जितना ही ज्यादा फोन में रहते हैं, उतना ही ज्यादा अकेलापन महसूस करते हैं। ऐसे में इससे दूरी बनाने की आदत मानसिक स्वास्थ्य बेहतर बनाती है।

{ गजल / हबीब कैफी }

मोहब्बत में जो लिखता है
अंधेरे में भी दिखता है

वहां कुछ फूल खिलते हैं
जहां वो पांव टिकता है

जिसे सब इश्क कहते हैं
सर-ए-बाजार बिकता है

फकत रोटी नहीं सिकती
तवे पर दिल भी सिकता है

महकता फूल लिखना था
उसी को खार लिखता है

{ व्यंग्य / महेश कुमार केशरी }

प्रभु बचाए ऐसे पड़ोसी से

करते हैं, सांप चंदन के पेड़ से हमेशा लिपटे रहते हैं। हालांकि मैं चंदन जैसा तो बिल्कुल नहीं हूं, फिर भी न जाने क्यों आस-पड़ोस के लोग मुझसे लिपटने को आतुर रहते हैं। कुछ ऐसे ही बगल के घर में रहने वाले मेरे एक पड़ोसी भी हैं। मेरे घर आ धमकने का उनको बस बहाना चाहिए। कभी चीनी, कभी टमाटर, कभी धनिया पत्ती तो कभी मिर्च गोलकी मांगने चले आते हैं। उन पड़ोसी महाशय को जब-जब कोई जरूरत होती है, वे भुजंग की तरह मुझसे आकर चिपट जाते हैं। गोया कि मैं आदमी नहीं बल्कि चंदन का पेड़ होऊं। उनका मेरे घर आना-जाना ऐसे होता है, जैसे मेरा घर नहीं, कोई धर्मशाला हो। ऐसे पड़ोसी मुझे मिले हैं, जिनको दिन भर में मुझसे दसियों बार काम पड़ता है। 'भाई साहब! भाई साहब!' कह-कह कर वे मुझे चूना लगाते रहते हैं। कभी-कभी तो मुझे लगता है, जैसे मैंने इन पड़ोसी महाशय को गोद लिया हुआ है। और वे मेरे बच्चे सरीखे हैं। वाह रे भाई! मान-न-मान मैं तेरा मेहमान। कभी 'हम बाहर जा रहे हैं, जरा घर देखिएगा।' कभी 'जरा बाइक की चाबी दीजिएगा बच्चे को स्कूल छोड़ने जाना है।' तो कभी 'बाजार जा रहे हैं, जरा मेरा फलना-ढिमकाना सामान भी लेते आइएगा।' अगर कभी थोड़ी नाराजगी मैं जताता तो दांत निपोरते हुए बोलते, 'अब एक पड़ोसी ही तो दूसरे पड़ोसी के काम आता है!' किसी दिन आकर पूछते हैं, 'भाई आपके पास कैंची होगी?' तो किसी रोज कहते, 'भाई साहब आपके पास रस्सी तो होगी?' मन आता है कि कह दूं, 'जिस भी चीज की जरूरत पड़े, वो आपको मुझसे ही चाहिए होती है। भला मैं आपूर्ति मंत्रालय में काम तो नहीं करता कि हर चीज का जुगाड़ करके आपके लिए रखा होऊं। भाई मैंने आपका ठेका थोड़ी न लेकर रखा है।' अभी बीते दिनों उन्हीं पड़ोसी का खल चोरी हो गया। वे मुझ पर झल्लाने लगे, 'आप के भरोसे घर छोड़कर गया था, देखिए मेरा खल चोरी हो गया।' मन में आया उसी खल में उन्हें कूट दूं। कह दूं कि आपने मुझे अपना खरीदा हुआ नौकर समझ लिया है क्या, जो मैं आपकी चाकरी करूंगा।

मेरे घर आ धमकने का पड़ोसी महोदय को बस बहाना चाहिए। कभी चीनी, कभी टमाटर, कभी धनिया पत्ती तो कभी मिर्च गोलकी मांगने चले आते हैं। गोया मेरा घर नहीं, कोई धर्मशाला हो।

पता नहीं कब मेरा पिंड छूटेगा इन महाशय से! भगवान बचाए ऐसे पड़ोसी से। *

{ लघुकथा / डॉ. रंजना जायसवाल }

डुबकी

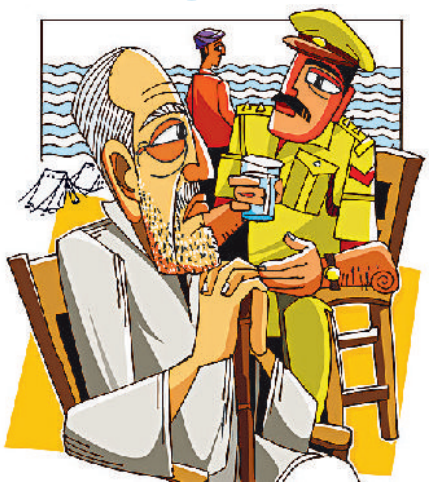

खोया-पाया कैंप में उस बूढ़े बाबा को बैठे छह घंटे हो गए थे। रात गहराती जा रही थी। अभी तक उन्हें कोई ढूंढने भी नहीं आया था। बाबा की आंखें एक आशा के साथ हर आहट के साथ दरवाजे तक जातीं, लेकिन वह निराश होते। कैंप के कर्मचारी की ड्यूटी बदलने का समय हो गया था। नए कर्मचारी ने पानी का गिलास पकड़ाते हुए बाबा से पूछा, 'आप कहां से आए हैं?'

'बेटा काफी दूर से आए हैं।'

'कुछ नाम तो होगा।'

'नाम...' बाबा ने याद करने की कोशिश की।

'किसके साथ आए हैं?'

'कलुवा, हमारा इकलौता बेटा'

'कुंभ नहाए आए थे?'

'हमार बेटवा ब्याह के दस बरस के बाद पैदा हुआ था। उसकी अम्मा मन्नत की रही, गंगा मैया को साड़ी चढ़ाएगी पर परमात्मा को कुछ और ही मंजूर था। अब जइबे तब जइबे करते-करते बख्त निकल गया। उसकी अम्मा ने मरते बख्त कसम ली थी। बचुवा के साथ मन्नत उतारे आए रहे। कुंभ नहाए लेब और मन्नत भी उतार देब।'

'बेटा कहां है बाबा?'

'हमसे बोला कुछ खाए का सामान लेने जाए रहे। इहां बैठे रहो हम अबही आत है।'

'फिर?'

'हमको बैठाकर पता नहीं कहां चला गवा? पुलिस वाले हमको इहां पहुंचा गए। बेचारा कितना परेशान हो रहा होगा।' बाबा की आंखों में अपने बेटे कलुवा के लिए चिंता उभर आई। कर्मचारी समझ चुका था, बीते कुछ दिनों में बाबा जैसे न जाने कितने लोग अपनों की तलाश और इंतजार में भटक रहे थे। 'बाबा, दस बार माइक पर कलुवा का नाम पुकारा जा चुका है। फोन नंबर याद है उसका?'

'फोन?'

'वापसी कब थी?'

'छः बजे की टरेन थी।'

'पर बाबा अब तो नौ बज रहे हैं।'

'नौ!' बाबा की आंखों के जुगनू धप्प पड़ गए।

'कलुवा आता ही होगा। हमें लिए बिना कैसे जाएगा?'

बाबा ने धीरे से बुदबुदाया। सामने गंगा मैया मंद-मंथर गति से बह रही थी। वह एक और पाप की साक्षी थी। जिसे कोई डुबकी धुल नहीं सकती थी। *

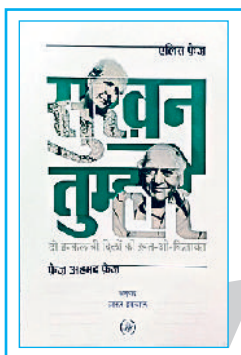

पुस्तक: सुखन तुम्हारे, लेखक: फैज अहमद फैज-एलिस फैज, अनुवाद: जफर इकबाल, मूल्य: 550 रुपए, प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

दो दिलों की खत-ओ-किताबत

गजलों-नज्मों का शायद ही कोई ऐसा कद्रदान होगा, जो फैज अहमद फैज के नाम से नावाकिफ हो। अपनी शायरी में इंकलाबी तेवर और हुकूमत की बंदिशों को चुनौती देने वाले फैज के भीतर एक नाजुक दिल पति और बेहद जज्बाती पिता भी मौजूद था, इसकी बानगी उनके द्वारा लिखे उन खतों में दिखती है, जिनको उन्होंने कैद के दौरान अपनी पत्नी और बच्चों को लिखे थे। हाल में छपकर आई किताब 'सुखन तुम्हारे' में फैज के द्वारा लिखे गए 135 खत और उनकी पत्नी एलिस के द्वारा लिखे गए 178 खतों को संकलित किया गया है। वर्ष 1951 में पाक सरकार द्वारा गैर कानूनी तौर पर गिरफ्तार किए गए फैज, करीब चार वर्ष तक जेल में रहे। इस दौरान फैज और एलिस के बीच हुई खत-ओ-किताबत का महत्व किसी ऐतिहासिक दस्तावेज से कम नहीं है। यहां गौर करने वाली बात है कि फैज की गिरफ्तारी ने उन्हें बेबस नहीं और मजबूत बना दिया था। 17 जुलाई 1952 को लिखे खत में वह कहते हैं, 'यह जख्म बहुत अचानक, बहुत बेसबब लगा है लेकिन इसे सहने का बल मुझमें है। और इसके सामने भी मेरा सिर नहीं झुकेगा।' 24 अगस्त 1954 को एलिस, फैज को लिखे खत में भीगे जज्बातों से उनकी गैरमौजूदगी को महसूस करती हैं, 'जब मीजू ने केक काटा, उसने अपना मुंह बना लिया। आंखें बंद कीं और उस चीज की दुआ मांगी, जिसके लिए हम सब मांग रहे थे- खुदा तुम्हें हमारे पास घर भेज दें।' कह सकते हैं इस किताब में एक इंकलाबी शायर और उनकी पत्नी के व्यक्तित्व का बिल्कुल नया पहलू हमारे सामने उजागर होता है। *

मध्य प्रदेश का प्राणपुर गांव

तमिलनाडु स्थित औरोविले गांव

वैसे तो पर्यटन के लिहाज से अपने भारत देश में अलग-अलग तरह के बेशुमार स्थल मौजूद हैं। लेकिन अगर आप बिल्कुल अनोखे और सुकून भरे पर्यटन स्थल घूमना चाहते हैं तो आपको कुछ विशिष्ट पर्यटन गांवों का रुख करना चाहिए। यहां बता रहे हैं देश के कुछ ऐसे खूबसूरत गांवों के बारे में, जो आपके लिए परफेक्ट ग्राम्य-पर्यटन स्थल हो सकते हैं।

गांवों में मिलेगी सुकून की छांव

टूरिस्ट प्लेसेस / समीर चौधरी

आमतौर पर माना जाता है कि गांवों में सुविधाओं की कमी होती है। इसीलिए शहर के लोग वहां जाना पसंद नहीं करते हैं। लेकिन आपको जानकर अच्छा लगेगा कि कुछ प्रदेशों के चुने हुए गांवों को विशिष्ट पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया गया है। जहां आप आधुनिकता और शहरी शोर-शराबे से दूर शांत, स्वच्छ और सुकून भरा अनुभव पा सकते हैं। लद्दाख की पहाड़ियों और छत्तीसगढ़ के जंगलों से लेकर, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश तक में कई ऐसे गांव हैं, जो विरासत और प्रकृति को सुरक्षित रखे हुए हैं। अपनी इसी विशेषता के कारण यह उन पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं, जिनकी ग्रामीण जीवनशैली, संस्कृति व इतिहास में दिलचस्पी होती है। ऐसे ही कुछ गांवों के बारे में जानिए।

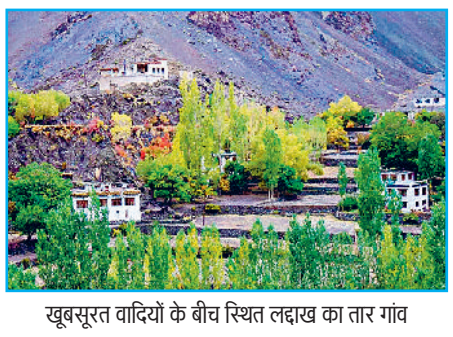
खूबसूरत वादियों के बीच स्थित लद्दाख का तार गांव

छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में स्थित धुडमारास गांव

सावरवानी-लाड़पुरा खास-प्राणपुर, मध्य प्रदेश: मध्य प्रदेश के ये तीन गांव आपको ग्रामीण भारत की सुंदर छवियों से रूबरू कराते हैं। प्राणपुर, सावरवानी व लाड़पुरा खास गांवों को वर्ष 2024 में सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांवों के रूप में सम्मानित किया जा चुका है। सावरवानी, आपको गोंड आदिवासी जीवन का अनुभव कराता है। यहां आरामदायक होमस्टे और सुंदर फार्मलैंड्स हैं। लाड़पुरा आपको विश्वसनीय बुंदेली एहसास से आकर्षित करता है। यहां के परंपरागत घर व हाथ से पेंट की गईं खूबसूरत दीवारें पर्यटकों को मोहित करती हैं। प्राणपुर, भारत का पहला क्राफ्ट हैंडलूम पर्यटन गांव है, जहां लगभग 900 बुनकर हैं, जो चंदेरी कपड़ा बुनने की कला में माहिर हैं। इन गांवों में आप क्राफ्ट वर्कशॉप्स, फॉरेस्ट वॉक, साइकिलिंग ट्रेल्स और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अनुभव कर सकते हैं।

उत्तर प्रदेश का कारिकोट गांव

ग्वालियर एयरपोर्ट से प्राणपुर 240 किमी. और लाड़पुरा खास 123 किमी. की दूरी पर है, जबकि जबलपुर से सावरवानी की दूरी 220 किमी. है।

तार गांव, लद्दाख: लद्दाख क्षेत्र में इस गांव को पहला सीसीए (कम्युनिटी-डिक्लेयर्ड कंजरवेशन एरिया) घोषित किया गया। लद्दाख का यह खूबसूरत गांव भी पर्यटन मंत्रालय की भारत के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांव की 2024 की सूची में शामिल हो चुका है। इसके संरक्षित क्षेत्र का प्रबंधन स्थानीय समितियां करती हैं, जोकि अपने प्राकृतिक संसाधनों, संस्कृति व परंपराओं को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी निभाती हैं। इनके पास समुदाय की निगरानी वाला पर्यटन, शून्य-प्लास्टिक अभियान और लद्दाखी सांस्कृतिक प्रथाओं के संरक्षण का भी दायित्व है। यहां आप ऊंचाई पर ट्रैकिंग, प्राचीन मठों को देख सकते हैं और ईको-होमस्टे में ठहर सकते हैं। यहां आने के लिए निकटतम एयरपोर्ट लेह है, जहां से तार लगभग 85 किमी. के फासले पर है।

कारिकोट गांव, उत्तर प्रदेश: उत्तर प्रदेश के बहराइच जिले में स्थित कारिकोट गांव को इंडियन सब-कॉन्टिनेंट रेस्पॉन्सिबल टूरिज्म अवार्ड 2025 (पीस, अंडरस्टैंडिंग एंड इन्क्लूसिविटी) से सम्मानित किया जा चुका है। स्थानीय थारू आदिवासी समुदाय के प्रयासों से इस गांव में होमस्टे, क्रॉस-बॉर्डर ईको-टूरिज्म व सांस्कृतिक अनुभव को प्रोत्साहित करने के साथ ही देशज क्राफ्ट, खान-पान व लोककला को पुनर्जीवित किया गया है, जिससे यह गांव थारू विरासत का लाइव म्यूजियम बन गया है। आप यहां खासतौर से विलेज वॉक, स्थानीय खान-पान, हस्तकला ट्रेल, झील के किनारे पक्षियों को देखने के साथ ही स्थानीय कहानी सुनाने के आयोजनों का अनुभव कर सकते हैं। इससे निकटतम एयरपोर्ट लखनऊ है, जहां से यह गांव लगभग 200 किमी. दूर है।

औरोविले गांव, तमिलनाडु-पुडुचेरी: औरोविले गांव वैसे तो तमिलनाडु में है, लेकिन इसका कुछ हिस्सा पुडुचेरी में भी है। यह भारत में स्थित एक अंतरराष्ट्रीय टाउनशिप है, जिसे यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त है। इसकी भूमि एक जमाने में कटाव के कारण बेकार हो गई थी, लेकिन अब दशकों के वनीकरण, ईको-आर्किटेक्चर और वेस्ट-फ्री सिस्टम से फिर हरी-भरी हो गई है। यहां पर आप मैत्री मंदिर देख सकते हैं। इसके अलावा सस्टेनेबल-लिविंग वर्कशॉप, पॉटरी, वीविंग और योग सत्र में हिस्सा लेने के साथ ही 3,000 एकड़ में फिर से लगाए गए वन में साइकिलिंग का रोमांचक अनुभव ले सकते हैं। औरोविले गांव चेन्नै एयरपोर्ट से लगभग 140 किमी. और पुडुचेरी से तकरीबन 11 किमी. की दूरी पर स्थित है।

धुडमारास गांव, छत्तीसगढ़: छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में धुर्वा कबीले द्वारा संचालित यह पर्यटन गांव ईको-फ्रेंडली अनुभव प्रदान करता है, जैसे- बैंबू राफ्टिंग, कयाकिंग और ट्रैकिंग। यहां सोलर-पॉवर इंफ्रास्ट्रक्चर है। वन संरक्षण प्रयासों के कारण परंपरागत जल स्त्रोतों को दुरुस्त किया गया है और स्थानीय तौर पर निर्मित होम स्टे भी हैं। इस गांव में आदिवासी संस्कृति, परंपरागत शिल्प व साल वन ट्रेल्स का आनंद लेने के साथ ही लोक संगीत और स्थानीय खेतों से मेज तक जायकेदार भोजन का अनुभव ले सकते हैं। सतत पर्यटन विकास के लिए धुडमारास गांव का चयन यूएनडब्लूटीओ बेस्ट टूरिज्म विलेज अपग्रेड प्रोग्राम 2024 में किया गया था। यहां से निकटतम एयरपोर्ट जगदलपुर है, जहां से यह गांव लगभग 35 किमी. के फासले पर है। *

भय को जब करेंगे पराजित तब मिलेगी मनचाही सफलता

कई बार हमारे भीतर कुछ ऐसे डर समा जाते हैं, जो सफलता और खुशहाल जीवन की राह में बड़ी रुकावट बन जाते हैं। कौन से हैं ये डर और इनसे कैसे निपटा जाए, मनचाही सफलता पाने के लिए आपको जरूर जानना चाहिए।

सेल्फ मोटिवेशन / शिखर चंद जैन

डर सफलता की राह में सबसे बड़ी अड़चन होती है। 'जो डर गया समझो मर गया', 'डर के आगे जीत है।' ये कुछ पॉपुलर कोटेशंस या फिल्मी डायलॉग हैं, जिन्हें आपने कहीं न कहीं पढ़ा या सुना होगा। सवाल है कि आखिर ये कौन से डर हैं, जिनसे उबरना जरूरी है और इनसे कैसे उबरें, ताकि आप सफल, समृद्ध जीवन की ओर बढ़ सकें।

पैसे न होने का डर: अमीर हो या मध्य वर्ग के लोग, पैसों की कमी होने से सब डरते हैं। मध्य और निम्न वर्ग को और ज्यादा गरीब होने का डर सताता है। पैसे की कमी का डर व्यक्ति की महत्वाकांक्षाओं, जोखिम लेने की क्षमता और हिम्मत को खत्म कर देता है। सबसे पहले निर्णय की शक्ति का उपयोग करके इस डर को दूर करें। अपनी चेतना को हमेशा धन की कमी से हटाकर धन की अधिकता पर केंद्रित करें। धन कमाने के तरीकों के बारे में सोचें, न कि गरीबी के परिणामों के बारे में। अपनी आय बढ़ाने का एक स्पष्ट और लिखित लक्ष्य और योजना बनाएं। जब आपके पास काम करने की एक ठोस योजना होती है, तो डर की जगह आत्मविश्वास ले लेता है। हमेशा यह सोचें कि आपकी आंतरिक खुशी भौतिक संपत्ति से अधिक महत्वपूर्ण है। इसके साथ ही पूरी मेहनत से धन कमाने के अपने प्रयास जारी रखें।

आलोचना का डर: यह डर अकसर लोगों को नए विचार आजमाने, जोखिम लेने या अपने सपनों का पीछा करने से रोकता है, क्योंकि उन्हें लगता है कि दूसरे लोग क्या सोचेंगे या कहेंगे? इस डर को दूर करने का आसान तरीका यही है कि दूसरों की राय की परवाह न करें। लोग अकसर आपकी आलोचना इसलिए करते हैं, क्योंकि या तो वे खुद डरे हुए होते हैं या फिर आपसे ईर्ष्या करते हैं। अपने कार्यों और निर्णयों के लिए खुद को जवाबदेह बनाएं। आत्म-अनुशासन आपको बाहरी आलोचनाओं से प्रभावित हुए बिना अपने लक्ष्य पर टिके रहने में मदद करता है। आलोचना का डर आपकी रचनात्मकता और कल्पनाशक्ति को खत्म कर देता है। इसलिए खुद को रचनात्मक कार्यों में लगाएं।

बीमारी-मृत्यु का डर: यह डर अकसर किसी क्रॉनिक बीमारी या नियमित शारीरिक दर्द से उत्पन्न होता है। कई बार किसी नजदीकी की बीमारी देखकर भी ऐसा होता है। यह डर अकसर मानसिक तनाव पैदा करता है। इसे दूर करने के लिए बीमारी के बारे में लगातार सोचना या बात करना बंद करें। अपने मन को सकारात्मक और स्वस्थ विचारों से भरें। स्वास्थ्यवर्धक जीवनशैली अपनाएं। नियमित व्यायाम, संतुलित आहार और पर्याप्त आराम पर ध्यान केंद्रित करें। अपनी दिमागी शक्ति का उपयोग करें। यह विश्वास करें कि एक स्वस्थ दिमाग एक स्वस्थ शरीर का निर्माण करता है। अपनी मानसिक ऊर्जा को ठीक होने या स्वस्थ रहने में लगाएं, न कि बीमार पड़ने के डर में।

रिश्ते खोने का डर: यह डर किसी प्रियजन, जीवनसाथी या परिवार के सदस्य से बिछड़ने या उन्हें खोने के भय से जुड़ा होता है। इसे दूर करने के लिए आत्म-प्रेम और आत्मविश्वास बढ़ाएं। जब आप खुद से प्यार करते हैं और खुद पर भरोसा करते हैं, तो आप दूसरों पर भावनात्मक निर्भरता कम कर देते हैं। ईर्ष्या इस डर का सबसे बड़ा संकेत है। तर्कसंगत रूप से अपनी असुरक्षाओं को पहचानें और उन्हें तर्क से दूर करें। यह समझें कि आप किसी को नियंत्रित नहीं कर सकते। रिश्ते विश्वास और आपसी सम्मान पर टिके होते हैं, डर पर नहीं।

बुढ़ापे का डर: यह डर अकसर उम्र बढ़ने के साथ आने वाली शारीरिक कमजोरी, शारीरिक आकर्षण में कमी, आर्थिक अभाव और मृत्यु की संभावना से जुड़ा होता है। इसे दूर करने के लिए बुढ़ापे को अनुभव और ज्ञान के रूप में देखें। उम्र बढ़ने को कमजोरी के रूप में नहीं, बुद्धिमत्ता के संचय के रूप में स्वीकार करें। शारीरिक और मानसिक रूप से सक्रिय रहकर इस डर का मुकाबला करें। नए कौशल सीखें और जीवन में उत्साह बनाए रखें। अपनी आर्थिक सुरक्षा शुरू से ही सुनिश्चित करें। वित्तीय योजना बनाकर बुढ़ापे में संभावित गरीबी के डर को कम करें।

इनमें से कोई डर हो या कोई अन्य प्रकार का डर, सभी डरों को दूर करने का मूल मंत्र 'इच्छाशक्ति' और 'सकारात्मक मानसिक दृष्टिकोण' है। इन दो मूल मंत्रों को अपनाकर आप भयमुक्त खुशहाल जीवन जी सकते हैं। *

भारत की प्राचीनतम और महानतम नदियों- गंगा, नर्मदा की तरह ही ताप्ती नदी का भी भारतीय संस्कृति, भूगोल एवं अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान है। ताप्ती नदी से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों के बारे में बता रहे हैं, जिनसे आप इस नदी की महत्ता को और भी अच्छे से जान-समझ पाएंगे।

गंगा-नर्मदा जैसी महत्वपूर्ण पश्चिमवाहिनी ताप्ती नदी

नदी गाथा / वीना गौतम

ताप्ती जिसे तापी नदी भी कहते हैं, भारत की उन चुनिंदा बड़ी पश्चिम वाहिनी नदियों में से है, जो मध्य भारत से निकलकर अरब सागर में गिरती है। यह विशेषता इसे गंगा जैसी विशाल पूर्व वाहिनी नदी और नर्मदा जैसी महान पश्चिम वाहिनी नदी के समकक्ष बनाती है। भौगोलिक, आर्थिक, पारिस्थितिक और सांस्कृतिक स्तरों पर इस नदी की भूमिका अत्यंत व्यापक है।

उद्गम-प्रवाह: ताप्ती नदी का उद्गम मध्य प्रदेश के बेतूल जिले के पास सतपुड़ा पर्वतमाला में है। यहां से लगभग 724 किलोमीटर की यात्रा तय करते हुए महाराष्ट्र और गुजरात से गुजरती यह नदी अंततः अरब सागर में जा मिलती है। यह पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है। इस नदी की सहायक नदियां इसकी जलराशि को संपन्नता प्रदान करती हैं। ताप्ती की सहायक नदियों में पूर्णा, गिर्णा, वाघुर और अंजली जैसी नदियां शामिल हैं। ताप्ती को गंगा और नर्मदा के समकक्ष महत्वपूर्ण नदी इसलिए माना जाता है, क्योंकि यह भी इन्हीं की तरह विशाल नदी घाटी प्रणाली बनाती है। ताप्ती नदी का जलभरण क्षेत्र लगभग 65 हजार वर्ग किलोमीटर है।

ताप्ती नदी के तट पर स्थित मंदिर

जहां तक इसके बहाव की गति की बात है, तो शुष्क मौसम में इसका बहाव 0.3 से 0.6 मीटर प्रतिसेकेंड होता है, जबकि मानसून के दौरान ताप्ती नदी का बहाव 1.5 से 3 मीटर प्रति सेकेंड तक पहुंच जाता है। ताप्ती का औसत वार्षिक प्रवाह 17 से 18 बिलियन घन मीटर आंका गया है। इसका अधिकांश भाग जून से सितंबर यानी मानसून के दौरान प्राप्त होता है। ताप्ती नदी की वर्षा पर निर्भरता करीब 75 फीसदी है और शेष 25 फीसदी जलराशि इसके भूजल, पुनर्भरण और सहायक नदियों के जरिए प्राप्त होता है।

संस्कृति की वाहक: जिस तरह गंगा नदी-घाटी में प्राचीन सभ्यताएं विकसित हुईं, वैसे ही ताप्ती घाटी में भी आदिवासी समाज, कृषि संस्कृतियां और व्यापारिक नगर विकसित हुए। गंगा और नर्मदा की तरह ताप्ती को भी अनेक स्थानों में पवित्र नदी का दर्जा प्राप्त है और इसके किनारे मेले और पवित्र स्नानों से संबंधित पर्व आयोजित किए जाते हैं। देश की दूसरी पवित्र नदियों की तरह ताप्ती के तट पर भी अनेक महत्वपूर्ण मंदिर स्थित हैं।

अर्थव्यवस्था में योगदान: चूंकि ताप्ती पश्चिम वाहिनी नदी है, इसलिए इसमें ढाल अपेक्षाकृत ज्यादा है। यही कारण है कि इसका प्रवाह पूर्वगामी नदियों के मुकाबले ज्यादा है, जिससे जल विद्युत उत्पादन के लिए ताप्ती महत्वपूर्ण नदी मानी जाती है। इसके पानी का उपयोग सिंचाई के लिए, पेयजल के रूप में, औद्योगिक उपयोग हेतु तथा विद्युत उत्पादन आदि में किया जाता है। ताप्ती नदी की मिट्टी जलोढ़ है, जो अत्यंत उपजाऊ होती है। इस कारण इसके परिक्षेत्र में दोहरी फसल प्रणाली सहजता से संभव है और किसान अपेक्षाकृत कम सिंचाई लागत में खेती कर पाते हैं। ताप्ती बेसिन एक स्वतंत्र और बड़ा जलग्रहण क्षेत्र है, जो लाखों लोगों की कृषि, पेयजल और औद्योगिक आवश्यकताओं को पूरा करती है। यह गुण ही इसे पश्चिम की नर्मदा और पूर्व की गंगा जैसी नदियों के समकक्ष बनाती है। ताप्ती घाटी कपास, सोयाबीन, गन्ना, केला और विभिन्न तरह की दालों की खेती के लिए जानी जाती है। गंगा की तरह ताप्ती नदी भी कृषि आधारित जीवनरेखा की भूमिका निभाती है। ताप्ती नदी कृषि एवं ग्रामीण रोजगार का भी बड़ा आधार बनाती है।

ताप्ती नदी के किनारे स्थित शहर विशेष रूप से कपड़ा, रसायन, हीरा कटाई और खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों के लिए प्रसिद्ध हैं। इससे लाखों रोजगार और शहरी विकास को बल मिलता है। इसी नदी के किनारे सूरत जैसा औद्योगिक और व्यापारिक शहर स्थित है।

समृद्ध पारिस्थितिक तंत्र: ताप्ती नदी में मीठे पानी की अनेक महत्वपूर्ण प्रजातियों की मछलियां पाई जाती हैं, जिनमें रोहू, कतला और मृगल शामिल हैं। सतपुड़ा क्षेत्र से गुजरते समय यह नदी कई वन क्षेत्रों को सिंचित करती है, जिससे वन क्षेत्रों का पारिस्थितिकी तंत्र गतिशील रहता है। ताप्ती नदी के डेल्टा क्षेत्र में पक्षियों की कई प्रजातियां पाई जाती हैं और प्रवासी पक्षियों का भी यह आश्रय स्थल बनती है। ताप्ती बेसिन में नदी का पानी आस-पास के जलस्रोतों को भरता है, जिससे कुओं, नलकूपों आदि में पूरे साल जल उपलब्ध रहता है।

मौजूद हैं कई संकट: देश की अन्य बड़ी नदियों की तरह ताप्ती भी कई तरह की औद्योगिक और पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर रही है। यह भी औद्योगिक प्रदूषण से ग्रस्त है। इस नदी में भी बड़े पैमाने पर शहरी अपशिष्ट आकर मिलता है तथा इसके आस-पास में भी अवैध रेत खनन आदि की घटनाएं होती रहती हैं। सबसे चिंताजनक बात यह है कि हाल के कुछ सालों में जलवायु परिवर्तन और वर्षा की अनिश्चितता की भी यह नदी शिकार हुई है। यही नहीं इस सबके चलते ताप्ती नदी की गुणवत्ता और जैव विविधता दोनों प्रभावित हुई है। ताप्ती नदी पर मंडरा रहे इन संकटों के मद्देनजर इसके संरक्षण के लिए कई कदम उठाए गए हैं। जैसे अपशिष्ट जलशोधन संयंत्र, नदी किनारे हरित पट्टी का विकास, सामुदायिक जागरुकता और सतत जल प्रबंधन। *

पिछले महीने से सोनी एंटरटेनमेंट चैनल और सोनी लिव पर एक नया शो शुरू हुआ है- 'व्हील ऑफ फॉर्चून', जिसे होस्ट कर रहे हैं अक्षय कुमार। इस शो को उन्होंने क्यों एक्सेप्ट किया? इस सो, अपकमिंग फिल्मों के साथ-साथ अपनी पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ से जुड़े सवालों पर अक्षय कुमार ने खुलकर जवाब दिए हैं इस खास मुलाकात में।

जो आपकी तकदीर में है वह जरूर आपके पास आएगा: अक्षय कुमार

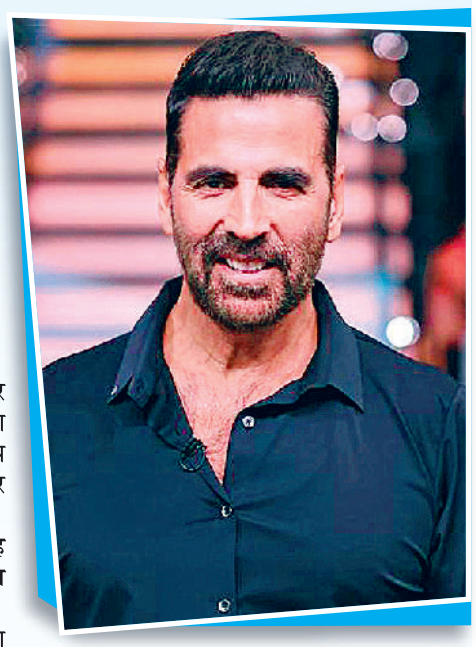

खास मुलाकात / आरती सक्सेना

हाल में ही अक्षय कुमार टीवी और ओटीटी प्लेटफॉर्म पर एक ऐसा रियालिटी शो लेकर आए हैं, जो पहले से ही 60 देशों में पॉपुलर हो चुका है। यह अमेरिका का नंबर वन रियालिटी शो है। इस शो का नाम 'व्हील ऑफ फॉर्चून' है। गेम का पूरा फॉर्मेट अक्षय कुमार खुद बतौर होस्ट इस शो की शुरुआत में समझाते हैं, साथ ही मजाकिया अंदाज में सबको हंसाते नजर आते हैं। इस शो के अलावा अक्षय की फिल्म 'हैवान' रिलीज होने वाली है, जबकि एक और फिल्म 'भूत बंगला' अप्रैल में रिलीज होगी। दोनों ही फिल्मों को प्रियदर्शन ने डायरेक्ट किया है। अक्षय का अपने इस शो और आने वाली फिल्मों को लेकर क्या कहना है? और भी पर्सनल सवालों के जवाब अक्षय कुमार ने एक मुलाकात में बेबाक अंदाज में दिए। पेश है अक्षय कुमार से हुई लंबी बातचीत के प्रमुख अंश-

आप इन दिनों सोनी एंटरटेनमेंट चैनल पर टेलिकास्ट हो रहे गेम शो 'व्हील ऑफ फॉर्चून' को होस्ट कर रहे हैं। इस गेम शो को होस्ट करने के पीछे खास वजह क्या है?

मुझे यह शो बहुत ही दिलचस्प लगा, क्योंकि इसमें पार्टिसिपेंट्स को ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाने का मौका मिलता है। बहुत ज्यादा दिमाग नहीं लगाना है। अगर तकदीर ने साथ दिया तो कंटेस्टेंट्स, कुछ मिनटों में लाखों रुपए और कई अच्छे और महंगे गिफ्ट जीत सकते हैं। इस शो का फॉर्मेट सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी पॉपुलर है। पर्सनली मुझे भी इस शो में कई सारी खूबियां नजर आईं, इसलिए मैंने बतौर होस्ट यह शो करना स्वीकार किया।

अमिताभ बच्चन ने टीवी पर 'कौन बनेगा करोड़पति' और सलमान खान ने 'बिग बॉस' जैसे सुपरहिट शो के कई सीजंस सफलतापूर्वक होस्ट किए हैं। ऐसे में क्या आपको इन दोनों कलाकारों से कंपैरिजन का भी प्रेशर है?

नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। मैं इस मामले में बहुत पॉजिटिव हूं। मुझे कुछ करना है तो मैं करता हूं, नेगेटिव बातें सोच कर अपने आप को कमजोर नहीं बनाता। मुझे 'व्हील ऑफ फॉर्चून' का कॉन्सेप्ट दिलचस्प लगा तो मैंने शो होस्ट करना मंजूर कर लिया। जहां तक अमित जी और सलमान का सवाल है तो अमित जी मेरे लिए फादर फिगर हैं, सलमान मेरा अच्छा दोस्त है। दोनों ही लोग अपना काम बहुत अच्छे से कर रहे हैं। मेरा उनके साथ कोई कॉम्पिटिशन नहीं है। मैं इस शो को एंज्वॉय कर रहा हूं।

अगर 'व्हील ऑफ फॉर्चून' में आप होस्ट की जगह पार्टिसिपेंट होते तो आप दिमाग से खेलते या नसीब के भरोसे गेम को आगे बढ़ाते?

यह शो दिमाग से ज्यादा तकदीर के साथ खेला जा सकता है। शो में दिमाग सिर्फ इतना ही लड़ा सकते हैं कि गेम के दौरान पूछे गए सवालों का जवाब सोच-समझ कर दें, बाकी जब व्हील घूमता है तो जीरो पर भी रुक सकता है और एक करोड़ पर भी। मैंने इस शो में कई लोगों को लाखों रुपए जीतते हुए देखा है। सो अगर मैं कंटेस्टेंट होता तो मुझे भी सही जवाब देना पड़ता, बाकी किस्मत कितना साथ देती है, वह तो अपने हाथ में नहीं होता है।

'व्हील ऑफ फॉर्चून' में अक्षय कुमार का निराला अंदाज

अपने इस शो में क्या आप किसी खास बॉलीवुड एक्टर को बुलाना चाहेंगे?

अगर बॉलीवुड एक्टर को अपने शो में बुलाने की बात करें तो मैं सलमान, शाहरुख, विद्या बालन, सुनील शेट्टी, संजय दत्त इन सभी को अपने शो में बुलाना चाहूंगा।

आप तकदीर पर ज्यादा विश्वास करते हैं या मेहनत पर?

मेरा मानना है अगर आपकी तकदीर में कुछ नहीं है तो आप लाख कोशिश कर लो वह नहीं मिलेगा और अगर तकदीर में कुछ है तो आप वो पा ही लेंगे। मैं जब छोटा था तो अपने पापा के कंधों पर चढ़कर राजेश खन्ना साहब की शूटिंग और उनका बंगला देखने जाया करता था, मुझे क्या पता था कि एक दिन मेरी उनकी बेटी से ही शादी हो जाएगी। इसलिए मेरा मानना है कि जिंदगी में कुछ भी असंभव नहीं है। जो आपकी तकदीर में लिखा है, वह जरूर आपके पास आएगा।

बीते कुछ समय में आपकी कई फिल्में असफल रहीं। क्या फ्लॉप फिल्मों ने आपको निराश किया?

फ्लॉप फिल्में कुछ समय के लिए दुःखी जरूर कर देती हैं, लेकिन जिंदगी में कभी मैं निराश नहीं होता हूं। करियर की शुरुआत में मैंने 12 से 15 फिल्में एक साथ फ्लॉप दी थीं। लेकिन बाद में तकदीर ने पलटा खाया और मेरी कई फिल्में हिट हो गईं, जैसे 'खिलाड़ी', 'मोहरा', 'मैं खिलाड़ी तू अनाड़ी' एक्सेक्ट्रा। मेरा मकसद अपने किरदार के साथ पूरा न्याय करना है। फिर फिल्म फ्लॉप होती है या हिट, यह तो आने वाला वक्त ही बताएगा।

आने वाली फिल्म 'हैवान' में आप नेगेटिव रोल कर रहे हैं, क्या यह आपकी हीरो वाली इमेज को नुकसान पहुंचा सकता है?

मेरे ख्याल में ऐसा होगा नहीं, क्योंकि दर्शक भी अपने हीरो को हर तरह के किरदार में देखना चाहते हैं। 'हैवान' में मैं एक बार फिर नेगेटिव रोल कर रहा हूं। मुझे ऐसा लगता है कि दर्शक मुझे इस फिल्म के किरदार में भी बतौर एक्टर खूब पसंद करेंगे। *

पैसों से ज्यादा महत्वपूर्ण प्यार और रिश्ते

अक्षय कुमार के लिए लाइफ में पैसा ज्यादा महत्वपूर्ण है या प्यार, पूछने पर उनका जवाब होता है, 'मेरी नजर में लाइफ में पैसों से ज्यादा प्यार और रिश्तों की अहमियत है। मुझे अपनी बेटी के साथ वक्त बिताना बहुत अच्छा लगता है। खाली वक्त में मैं घर पर अपने परिवार के लिए खाना भी बनाता हूं। अगर आपके अपने आप के साथ हैं तो आप मेहनत करके पैसा कमा सकते हैं, लेकिन पैसों से आप रिश्ते या प्यार नहीं खरीद सकते हैं।'